श्रीमाध्वगौड़ेश्वरग्रन्थमाला – ३४

❀ श्री श्रीगौराङ्गमहाप्रभुर्जयति ❀

श्रीमहामन्त्रव्याख्याष्टकम्

प्रथमावृत्ति १०००
विजयादशमी
सम्वत् २०११

प्रकाशक–
कृष्णदास
(कुसुमसरोवर वाले)

पुस्तक मिलने का पता—
कृष्णदास बाबाजी (कुसुमसरोवर वाले)
श्रीमदनमोहनजी का मन्दिर,
वृन्दावन दरवाजा, मथुरा।

मुद्रक—
रमनलाल बंसल,
पुष्पराज प्रेस, मथुरा।

❀ भूमिका ❀

हरेकृष्ण महामन्त्र के सम्बन्ध में उत्कर्ष विचार यह है कि-बत्तीस अक्षरात्मक हरे कृष्णादि सोलह नाममन्त्र को श्रीमन्महाप्रभु श्रीगौरांगचन्द्र ने महामन्त्र करके निर्देश किया तथा उसका मधुर उपदेश के द्वारा जगत में प्रचार कर जगवासी का महान् उपकार किया। आज कल जगबासी जिस "हरेकृष्ण" महामन्त्रका जप अनुष्ठानादि करते हैं उस पाठ को पढ़ाने वाले एक मात्र श्रीमन्महाप्रभु जी तथा उनके परिकर हैं। बिना अर्थ से मन्त्र निष्फल होता है, अतएव अर्थ जान कर मन्त्र का चिन्तमन-जपादि करना चाहिये। श्रीप्रभु ने "हरेकृष्ण" महामन्त्र का सामान्यतः जिस प्रकार अर्थ का उद्देश किया है, उनके परिकरों ने ठीक उस अर्थ को विस्तृत भाव से उपदेश देकर उसका सरस प्रचार किया। महाप्रभु के परिकरों में से प्राय सब ही इस मन्त्र का सरस अनुष्ठान करते थे। श्रीहरिदास ठाकुरादिक कतिपय महानुभाव नित्य तीन लाख मन्त्र का जप करके जल ग्रहण करते थे, यह सब ग्रन्थन में प्रसिद्ध है। ग्रन्थों में ऐसी कहावत है कि जो "लक्षेश्वर" अर्थात् एक लाख मन्त्र जाप नहीं करते थे उनके साथ महाप्रभु का व्यवहार नहीं रहा। फलतः प्रभु परिकर में सब कोई एक लाख मन्त्र का अनुष्ठान करते थे। अभी भी महाप्रभु के भक्त-वैष्णवगण उस उपदेश का पालन करते आ रहे हैं। अधिकांश वैष्णव-भक्त तो अपनी शक्ति के अनुसार एक लाख से लेकर तीन लाख पर्य्यन्त अवश्य जप किया करते हैं। फल में इस मन्त्र का प्रचार विस्तृत रूप से संसार में फैल गया।

कोई कोई कहते हैं कि—कलिसन्तरण उपनिषद् कथित "हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे" इस नाममाला को श्रीमन्महाप्रभु ने व्युत्क्रम रूप से अर्थात् उलट करके "हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे" इस प्रकार से पाठ कर महामन्त्र नाम से प्रचार किया। परन्तु यह धारणा निर्मूलक है। वेद का वेदत्व उसकी अनुपूर्वी वर्णमाला पर निर्भर है। किन्तु विधेयक

मन्त्रों का तथा स्तुतिवाक्यों का विभक्ति-परिवर्तन व्याकरण महाभाष्य में पतञ्जलि उल्लेख करते हैं। अतएव भगवन्नाम में भेद न होने के कारण कलिसन्तरणोपनिषद् का मन्त्र भी भिन्न नहीं है। जप की अवस्था में उसकी आवृत्ति एकाकार हो जाती है। फलतः वेदपाठ के नियमों में अधिकारि विशेष ही उस का जप कर सकता है यह कोई बन्धन 'हरेकृष्ण" नाम को पूर्व में होने पर नहीं रहा। यहाँ पर और एक विचारणीय विषय यह है कि "कलिसन्तरण" में उस षोडशनामात्मक मन्त्र को नाम करके कहा गया है। यह मन्त्र है किम्वा उसकी यह दीक्षादिक विधि है इसका कोई उल्लेख नहीं है।

प्रायः कलिकाल में ब्राह्मण गण शूद्र की भांति अशुचि परायण होते हैं। आगम (तन्त्र) उक्त विधि के द्वारा उनकी शुद्धि हो सकती है, किन्तु वेदोक्त विधान के द्वारा शुद्धि असम्भव हो उठती है। विष्णुयामल में कहा है—

अशुद्धा शूद्रकल्पाहि ब्राह्मणाः कलिसम्भवाः।
तेषामागममार्गेण शुद्धि र्न श्रौतवर्त्मना॥

इसलिये कलिकाल में धर्म्म-कर्म्म साधन के लिये आगम अर्थात तन्त्रोक्त विधान प्राधान्य रूप से सूचित होता है।

कृते श्रुत्युक्त मार्गः स्यात् त्रेतायां स्मृतिभावितः।
द्वापरे तु पुराणोक्तं कलावागमसम्भवः॥

श्रीमद्भागवत में—

इति द्वापर उर्व्वीश स्तुवन्ति जगदीश्वरम।
नानातन्त्रविधानेन कलावपि तथा शृणु॥

इस श्लोक की टीका में श्रीधरस्वामि का वचन यथा—

"नानातन्त्रविधानेनेति कलौ तन्त्रमार्गस्य प्राधान्यं दर्शयति"।

आगमोक्त मार्ग में सब का अधिकार होता है। वेदोक्त मार्ग में शूद्र का अधिकार नहीं है। जिस प्रकार वेद में शूद्रादिकों का अनधिकार जान कर श्रीवेदव्यास जी ने सर्व्व साधारण

पुराणों की रचना की ठीक उसी प्रकार कलिकाल में महाप्रभु ने वेदोक्त "हरे राम" महामन्त्र में शूद्रों का अनधिकार देख सर्व-साधारण हित के लिये तन्त्रोक्त "हरे कृष्ण" महामन्त्र का ग्रहण कर उसका प्रचार किया। सिद्धान्त यह है—वेद में "हरे राम" क्रम से पाठ है और पुराण तन्त्रादि में "हरे कृष्ण" क्रम से पाठ है। महाप्रभु ने कलि-पीड़ित जीवों का वेदोक्त मन्त्र में अधिकार न देख कर आगम (तन्त्र) उक्त "हरे कृष्ण" मन्त्र से ही सब का मंगल हो सकता है इसलिये उसका उपदेश देकर सब को कृतार्थ किया। साथ ही साथ उस "हरे कृष्ण" महामन्त्र के द्वारा निज परम गुप्त धन प्रेमरत्न का प्राणिमात्र में प्रदान कर प्रभु के अन्तरंग परिकर बनाय दिया। निज परम अन्तरंगा ल्हादिनी शक्तिरूपिणी श्रीराधिका के प्रेम का आस्वादनार्थ नन्दनन्दन आपका अवतार हुआ था। आप ने उस राधाभाव का सरस आस्वादन किया तथा प्राणिमात्र को यत्किञ्चित् आस्वादन कराया। यह वस्तु और किसी अवतार में असम्भव होता था। अतएव उन्हें "महाप्रभु" करके सब कोई कहा करते हैं। कलियुग का धर्म्म नाम संकीर्त्तन है। उस का भी स्वयं आचरण कर सब को सिखाया। "नाम संकीर्त्तन"को समक्ष रख कर आप का प्राकट्य हुआ था। बहुत से लोक "नामकीर्त्तन" का याजन किया करते हैं, परन्तु वे सब नाम संकीर्त्तन के परम पिता श्रीमन्महाप्रभु से अपरिचित हैं फलतः वे प्रेम धन से वञ्चित होते हैं। अतएव सब के लिये यह चाहिये कि—हरेकृष्ण महामन्त्र के आदि उपदेशक, नामसंकीर्त्तन के जन्मदाता, प्रेमावतार श्रीगौरांग महाप्रभु का आश्रय लेकर प्रेमधन से धनी होवें। महाप्रभु तो प्राणिमात्र के उपास्य हैं। बिना उनकी उपासना से प्रेम नहीं मिलता है। वे किसी एक सम्प्रदाय की वस्तु नहीं है। वे तो समस्त सम्प्रदाय के परम धन हैं।

महामन्त्र के सम्बन्ध में आगम (तन्त्र) पुराणों का वचन—

ज्ञानामृतसारे—

शिष्यस्योद्ङमुखस्थस्य हरेर्नामानि षोडश।

संश्राव्यैव ततो दद्यान्मन्त्रं त्रैलोक्यमङ्गलम् ॥

ब्रह्मयामले—

हरिं विना नास्ति किञ्चित् पापनिस्तारकं कलौ ।
तस्माल्लोकोद्धारणार्थं हरिनाम प्रकाशयेत् ॥
सर्व्वत्र मुच्यते लोको महापापात् कलौ युगे ।
हरेकृष्णपदद्वन्द्वं कृष्णेति च पदद्वयम् ।
तथा हरेपदद्वन्द्वं हरे राम इति द्वयम् ।
तदन्ते च महादेवि ! राम राम द्वयं वदेत् ।
हरे हरे ततो ब्रूयाद्धरिनाम समुद्धरेत् ।
महामन्त्रञ्च कृष्णस्य सर्व्वपापप्रणाशकमिति ॥

राधातन्त्रे वासुदेव उवाच—

शृणु मात महामाये विश्वबीजस्वरूपिणि ।
हरिनाम्नो महामाये क्रमं वद सुरेश्वरि !

देव्युवाच—

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥
द्वात्रिंशदक्षराण्येव कलौ नामानि सर्व्वदम् ।
शृणु च्छन्दः सुतश्रेष्ठ हरिनाम्नः सदैव हि ॥
छन्दोहि परमं गुह्यं महत्पदमनव्ययम् ।
सर्व्वशक्तिमयं मन्त्रं हरिनाम्नः तपोधन ॥
हरिनाम्नोऽस्य मन्त्रस्य वासुदेव ऋषिः स्मृतः ।
गायत्री छन्द इत्युक्तं त्रिपुरा देवता मता ॥
महाविद्या सुसिद्धयर्थं विनियोगः प्रकीर्त्तितः ।
एतन्मन्त्रं सुतश्रेष्ठ ! प्रथमे शृणुयान्नरः ॥
श्रुत्वा गुरुमुखात् पुत्र दत्तकर्णे तपोधन ।
आदौ च्छन्दस्ततो मन्त्रं श्रुत्वा शुद्धो भवेन्नरः ॥
द्वादशाभ्यन्तरे श्रुत्वा कर्णशुद्धिमवाप्नुयात् ।
कर्णशुद्धिं विना पुत्र महाविद्यामुपास्य च ।

नारी वा पुरुषो वापि तत्क्षणान्नारकी भवेत् ॥

तत्रैव त्रिपुरावाक्यम्—

हरिनाम्ना विना पुत्र दीक्षा च विफला भवेत् ।
गुरुदेवमुखाच्छ्रुत्वा हरिनाम पराक्षरम् ।
ब्राह्मण-क्षत्र-विट्-शूद्राः श्रुत्वा नाम पराक्षरम् ।
दीक्षां कुर्य्युः सुतश्रेष्ठ महाविद्यासु सुन्दर ॥

तथाहि ब्रह्माण्डपुराणे राधाहृदयखण्डे द्वैपायनं प्रति लोमहर्षणवाक्यम्—

यत्त्वया कीर्त्तितं नाथ ! हरिनामेति संज्ञितम् ।
मन्त्रं ब्रह्मपदं सिद्धिकरं तद्वद नो विभो ! ॥

द्वैपायन उवाच—

ग्रहणाद् यस्य मन्त्रस्य देही ब्रह्ममयो भवेत् ।
सद्यःपूतः सुरामोऽपि सर्व्वसिद्धियुतो भवेत् ॥
तदहं वोऽभिधास्यामि महाभागवतो ह्यसि ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥
इत्यष्टं शतकं नाम्नां त्रिकालकल्मषापहम् ।
नातः परतरोपायः सर्व्ववेदेषु विद्यते ॥

तत्रैव वृषभानुं प्रति देव्या आदेशः—

गृहाण हरिनामानि यथाक्रममनिन्दितम् ।
पुलिने विरजा नद्या पुण्ये देवर्षिसेविते ॥
क्रतुर्नाम मुनिः श्रीमांस्तपते तपतांवरः ।
तत्र गत्वा महाबाहो ! हरिनामानि संशृणु ॥
इति मन्त्रं प्रदायैव तदा स भगवान् क्रतुः ।
इदमाह वचः पथ्यं भूयो हरिमनुस्मरन् ।
अतः परं महाबाहो जप विद्यां समाहितः ॥ इति ॥

अनन्तसंहितायाम्—

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥
षोडशैतानि नामानि द्वात्रिंशद्वर्णकानि हि ।
कलौ युगे महामन्त्रो सम्मतो जीवतारणे ॥"
"उत्सृज्यैतन्महामन्त्रं ये त्वन्यत्कल्पितं पदम् ।
महानामेति गायन्ति ते शास्त्रगुरुलङ्घिनः ॥"

महामन्त्र सम्बन्ध में वैदिक प्रमाण–

तथाहि कलिसन्तरण–उपनिषदि ।
नारदः पुनः पप्रच्छ तन्नाम किमिति ? सहोवाच हिरण्यगर्भः–

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

इति षोडशनाम्नां कलिकल्मषनाशनं नातः परतरोपायः सर्व्ववेदेषु विद्यते ॥
तथाहि अथर्व्ववेदे पिप्पलादशाखायाम्–

स्वानन्दात् मूलमन्त्रेण सर्व्वं ल्हादयते विभुः ।
द्वे शक्ती परमे तस्य ल्हादिनी सम्विदेव चेति ॥

स वा एतं मूलमन्त्रं जपति हरिरिति कृष्णः इति राम इति च ।
अत्र श्लोको भवति–

मन्त्रो गुह्यः परनो भक्तिवेद्यो नामान्यष्टावष्ट च शोभनानि ।

हरे कृष्ण महामन्त्र का उपदेशक श्रीमन्महाप्रभु गौरांगदेव हैं इसका कुछ प्रमाण हम यहाँ पर उपस्थित कराते हैं–
श्रीपाद रूपगोस्वामिजी अपनी "स्तवमाला" ग्रन्थ में कहते हैं–

हरेकृष्णेत्युच्चैः स्फुरितरसनो नामगणना–
कृतग्रन्थिश्रेणी–सुभगकटिसूत्रोज्ज्वलकरः ।
विशालाक्षो दीर्घागल–युगल–खेलाञ्चितभुजः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥

श्रीपाद प्रबोधानन्दसरस्वतीजी ने भी श्रीचैतन्यचन्द्रामृत नामक अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ में ऐसा ही कहा–

वध्नन् प्रेमभरप्रकम्पितकरो ग्रन्थीन् कटीडोरकैः

संख्यातुं निजलोकमङ्गल-हरेकृष्णेति नाम्नां जपन् ।
अश्रुस्नातमुखः स्वमेव हि जगन्नाथं दिदृक्षुर्गता-
यातैर्गौरतनु र्विलोचनमुदं तन्वन् हरिः पातु वः ॥

इसकी रसिकास्वादिनी टीका में-

"हरिनाम-महामन्त्रः संख्यया जप्य इति शिक्षयतो"

श्रीपादरघुनाथदास गोस्वामिजी ने "स्तवावली" नामक ग्रंथ में कहा है-

निजत्वे गौडीयान् जगति परिगृह्य प्रभुरिमान्
हरेकृष्णेत्युच्चै र्गणनविधिना कीर्त्तयत भोः ।
इति प्रायां शिक्षां जनक इव तेभ्यः परिदिशन्
शचीसूनुः किं मे नयनसरणीं यास्यति पुनः ।

श्रीचैतन्यभागवत में नागरिकजनों के लिये प्रभु का उपदेश इस प्रकार वर्णन किया है—

आपने सभारे प्रभु करेन उपदेश ।
कृष्णनाम महामन्त्र शुनह विशेष ॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥
प्रभु वले कहिलाम एइ महामन्त्र ।
इहा गिया जप सभे करिया निर्व्वन्ध ॥मध्यखण्ड २३ अ०

श्रीचैतन्यशतक में श्री सार्व्वभौमभट्टाचार्य्य का वचन-

विषण्णचित्तान् कलिघोरभीतान् संवीक्ष्य गौरो हरिनाममन्त्रम् ।
स्वयं ददौ भक्तजनान् समादिशत् कुरुष्व संकीर्त्तननृत्यवाद्यैः ॥

श्रीचैतन्यशतक में—

अनु ब्रह्माण्डयोर्मध्ये चैतन्येन समाहृताम् ।
हरेकृष्णरामनाममालां भक्तिपरायणाः ॥

तत्रैव-हरेर्नामप्रसादेन निस्तरेत् पातकीजनः ।
उपदेष्टा स्वयं कृष्णचैतन्यो जगदीश्वरः ॥
कृष्णचैतन्यदेवेन हरिनामप्रकाशितम् ।

येन केनापि तत्प्राप्तः धन्योऽसौ लोकपावनः ॥

श्रीचैतन्यचरितमहाकाव्य में आनन्दवृन्दावनचम्पूकार श्रीकविकर्णपूर महोदय ने कहा—

ततः श्रीगौराङ्गः समवददतीव प्रमुदितो
हरे कृष्णेत्युच्चै र्वद मुहुरिति श्रीमयतनुः ॥

गोविन्दकडचा में—

बाहु पसारिया प्रभु ब्राह्मणे तुलिला ।
तार परे भक्ति भरे गान आरम्भिला ॥
ब्राह्मणेर घर जेन हैल वृन्दावन ।
हरिनाम शुनिवारे आइसे ग्राम्यजन ॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

महाजनपद—

मथिया सकलतन्त्र हरिनाम महामन्त्र,
करे धरि जीवेरे बुझाय ॥

हरिनाममङ्गल नामक ग्रन्थ में संग्रहीत महज्जन के पद—

"हरे कृष्ण महामन्त्र उपदेश कराइया
तुमि आमार आमि तोमार वले" ।
"हरि भजन पहु करिल उद्धारे ।
अत ए से महामन्त्र याचिल सभारे ॥"
"आचण्डाल पतित जीवेर घरे घरे जाइया ।
हरिनाम महामन्त्र दिच्छे विलाइया ॥"

श्रीचैतन्यमङ्गल में—

"हरे कृष्ण नाम सेइ वले निरन्तर ।"
"प्रसन्न श्रीमुखे हरे कृष्ण कृष्ण वलि ।
विजय हैला गौरचन्द्र कुतूहली ॥"
"हरे कृष्ण हरे कृष्ण वलि प्रेम सुखे ।
प्रत्यक्ष हैला आसि अद्वैत सम्मुखे ॥"

—: विज्ञप्ति :—

१—श्रीपादजीवगोस्वामि जी की "हरिनामव्याख्या"

यह व्याख्या श्रीमान् केशवदास जी "भागवतनिवास" रमण-रेती वाले के द्वारा मुझे प्राप्त हुई थी, जोकि पहले सङ्गीत-माधव व चैतन्यचन्द्रामृत के साथ प्रकाशित हो गई है।

२—श्रीपाद श्रीलरघुनाथदासगोस्वामि जी कृत "हरिनाममहामन्त्रव्याख्या"

३—श्रीमन्महाप्रभु के परिकर श्रीवक्रेश्वर पण्डित गोस्वामि की परम्परा में श्रीगोपालगुरु जी की "हरिनाममहामन्त्रव्याख्या"

ये दोनों व्याख्या पहले बंगानुवाद के साथ बंगाक्षर में प्रकाशित हुई हैं तथा अनेक प्राचीन पुस्तकालय से इनकी प्रति प्राप्ति हो रही है।

४—श्रीयुक्त हरिदासठाकुर तथा श्रीअद्वैतप्रभु का प्रसंगरूप सोलहनामबत्तीसाक्षरात्मक "महामन्त्रव्याख्या"

यह व्याख्या अन्यत्र "मुरारी कड़चा" के अन्तर्गत उपलब्ध हो रही है। श्रीगुरुदेव बाबाजिमहाशय के द्वारा प्रकाशित "साधक-कंठहार" में इसका प्रकाशन पहले हो गया है। सम्प्रति डाक्टर पूर्णचन्द्र जी, आगरा (प्रतापपुरा) निवासी के द्वारा रचित हिन्दी भाषा अनुवाद के साथ देवाक्षर में इसका प्रकाशन हुआ है।

५—श्रीचैतन्यदास जी विरचित "महामन्त्रव्याख्या"

यह व्याख्या श्रीलविश्वनाथ चक्रवर्त्ती महोदय के द्वारा विरचित "हरिनामार्थदीपिका" का संक्षेप रूप है। पहले पदकल्पतरु नामक संगृहीत ग्रन्थ में यह प्रकाशित हुई है।

६–"श्रीहरिनामषोडश" अथवा मन्त्रषोडश।

चतुः संप्रदाय (खालसा) के अन्तर्गत माध्वगौड़ेश्वर संप्रदाय के श्रीमहन्त श्रीरासबिहारीदास जी महाराज (मालसर) के द्वारा "श्रीगोकुलानन्द जी मन्दिर, वृन्दावन से इसकी एक कापी तथा बन्धुवर श्रीश्यामगोपालदास जी से दूसरी प्राप्त हुई।

७–श्रीहरेकृष्णराममहामन्त्रकवचम्।

कालिदह निवासी बाबा श्रीकिशोरीदास जी महाराज के शिष्य श्रीमान् शंकरलाल जी के पास एक प्राचीन प्रति तथा श्रीमान् श्यामगोपालदास जी के पास एक प्रति मुझे देखने में मिली।

८–महामन्त्रविधिः

यह व्याख्या श्रीयुक्त नरहरि सरकारठाकुर महोदय के मुखपद्म से विनिर्गत हुई थी, जो कि श्रीखण्डवासी, चिरस्मरणीय, गौरनिष्ठ श्रीराग्वालनन्द शास्त्री के द्वारा "भक्तिचन्द्रिका" में पटल रूप से प्रकाशित हुई है।

बाबा किशोरीदास महाराज कालीदह निवासी के आग्रह से तथा उनके अनुगत शिष्य "मुजफ्फरपुर" निवासी श्रीमान् आत्माराम जी की सम्पूर्ण अर्थ सहायता से यह "महामन्त्रव्याख्याष्टक" प्रकाशित होकर प्रेमी सज्जनों के समक्ष उपस्थित है। आशा है प्रेमी सज्जन इसका पठन-पाठन कर मेरे परिश्रम को सार्थक करेंगे। अनेक खोज करने पर भी श्रीलविश्वनाथ चक्रवर्त्ती जी की हरिनामार्थदीपिका मुझ को प्राप्त नहीं हुई। किसी सज्जन के पास हो तो सूचित करें।

विनीत—

कृष्णदास,

(कुसुमसरोवर वाले)

❀ अथ साधकोचितव्याख्या ❀

भक्तो द्विविधः साधकः सिद्धश्च। साधको द्विधा प्राथमिकः प्रात्यहिकश्च। देहेन सिद्धो नित्यसिद्धः। तत्र प्राथमिको निजचित्त-शुद्धयर्थं जपति—

(१) हे हरे, मच्चित्तं हृत्वा भवबन्धनान्मोचय।
(२) हे कृष्ण, मच्चित्तमाकृष।
(३) हे हरे, स्वमाधुर्य्येन मच्चित्तं हर।
(४) हे कृष्ण, स्वभक्तद्वारा भजनज्ञानदानेन मच्चित्तं शोधय।
(५) हे कृष्ण, नामरूपगुणलीलादिषु मन्निष्ठां कुरु।
(६) हे कृष्ण, रुचिर्भवतु मे।
(७) हे हरे, निजसेवायोग्यं मां कुरु।
(८) हे हरे, स्वसेवामादेशय।
(९) हे हरे, स्वप्रेष्ठेन सह स्वाभीष्टलीलां श्रावय।

---

(१) हे हरे, मेरे चित्त का हरण कर संसार बन्धन से मोचन कीजिये।
(२) हे कृष्ण मेरे चित्त को आकर्षित कीजिये।
(३) हे हरे निज माधुर्य्य से मेरे चित्त का हरण कीजिये।
(४) हे कृष्ण निज भक्तजन के द्वारा भजन ज्ञान दान कर चित्त का शोधन कीजिये।
(५) हे कृष्ण नाम-रूप-गुण-लीलाओं में मेरी निष्ठा को बढ़ाइये।
(६) हे कृष्ण मेरी रुचि हो।
(७) हे हरे मुझे निज सेवायोग्य कीजिये।
(८) हे हरे निज सेवा का आदेश दीजिये।
(९) हे हरे निज प्रियजन के साथ अभीष्ट लीला का श्रवण कराइये।

(१०) हे राम, प्रेष्ठया सह स्वाभीष्टलीलां मां श्रावय।
(११) हे हरे, स्वप्रेष्ठेन सह स्वाभीष्टलीलां मां दर्शय।
(१२) हे राम, प्रेष्ठया सह स्वाभीष्टलीलां मां दर्शय।
(१३) हे राम, नामरूपगुणलीलास्मरणादिषु मां योजय।
(१४) हे राम, तत्र मां निजसेवायोग्यं कुरु।
(१५) हे हरे, मां स्वाङ्गीकृत्य रमस्व।
(१६) हे हरे, मया सह रमस्व।

(बाबा श्रीकिशोरीदासजी से प्राप्त)

---

(१०) हे राम प्रिया के साथ निज अभीष्ट लीला का श्रवण कराइये।
(११) हे हरे निज प्रियजन के साथ स्व अभीष्ट लीला का मुझ को दर्शन कराइये।
(१२) हे राम प्रिया के साथ निज अभीष्ट लीला का दर्शन कराइये।
(१३) हे राम नाम-रूप-गुण लीलाओं के स्मरण में मुझ को योजित कीजिये।
(१४) हे राम उनमें मुझ को निज सेवा की योग्यता दीजिये।
(१५) हे हरे मुझ को अङ्गीकार कर रमण कीजिये।
(१६) हे हरे मेरे साथ रमण कीजिये।

श्रीचैतन्यमुखोद्गीर्णा हरे कृष्णेति वर्णकाः ।
मज्जयन्तो जगत् प्रेम्णि विजयन्तां तदाह्वयाः ॥
यानि नामानि विरहे जजाप वार्षभानवी ।
तान्येव तद्भावयुक्तो गौरचन्द्रो जजाप ह ॥

❀ श्रीहरिनामव्याख्या ❀

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

सर्वचेतो हरः कृष्णस्तस्य चित्तं हरत्यसौ ।
वैदग्धीसारविस्तारैरतो राधा हरा मता ॥ १ ॥
कर्षति स्वीयलावण्यमुरलीकलनिःस्वनैः ।
श्रीराधां मोहनगुणालंकृतः कृष्ण ईर्य्यते ॥ २ ॥
श्रूयते नीयते रासे हरिणा हरिणेक्षणा ।
एकाकिनी रहःकुञ्जे हरेयं तेन कथ्यते ॥ ३ ॥

सर्व्वचित्त हारी श्रीकृष्ण के चित्त को भी निज वैदग्धीसार विस्तार से हरण करने के कारण श्रीराधा "हरा" करके कही जाती हैं। "हरा" शब्द का सम्बोधन में "हे हरे" ॥ १ ॥

निज लावण्य तथा मुरली-कलध्वनि आदिक के द्वारा मनोहर गुणों से अलंकृत श्रीहरि ही श्रीराधिका को आकर्षित कर कृष्ण नाम से कथित होते हैं। कृष्णशब्द के सम्बोधन में "हे कृष्ण" ॥२॥

ऐसा सुना जाता है कि रासावसर में हरिणनयना, श्रीराधिका अकेली रहः कुञ्ज में श्रीहरि के द्वारा नीता हुई थीं, इसलिये हरा करके कही जाती हैं। सम्बोधन में "हे हरे" ॥ ३ ॥

अङ्गश्यामलिमस्तोमैः श्यामलीकृतकाञ्चनः ।
रमते राधया सार्द्धमतः कृष्णो निगद्यते ॥ ४ ॥
कृत्वारण्ये सरः श्रेष्ठं कान्तयानुमतस्तया ।
आकृष्य सर्व्वतीर्थानि तज्ज्ञानात् कृष्ण ईर्य्यते ॥५॥
कृष्णेति राधया प्रेम्णा यमुनातटकाननम् ।
लीलया ललितश्चापि धीरैः कृष्ण उदाहृतः ॥६॥
हृतवान् गोकुले तिष्ठन्नरिष्टं पुष्टपुङ्गवम् ।
श्रीहरिस्तं रसादुच्चैरायतीति हरा मता ॥ ७ ॥
ह्यस्फुटं रायति प्रीतिभरेण हरिचेष्टितम् ।
गायतीति मता धीरैर्हरा रसविचक्षणैः ॥ ८ ॥

श्रीहरि निज अंग की श्यामलिमाओं के द्वारा सुवर्ण पर्य्यन्त को भी श्याममय करते हुए श्रीराधा के साथ रमण करने के कारण श्रीकृष्ण करके कहे जाते हैं। सम्बोधन में "हे कृष्ण" ॥ ४ ॥

श्रीहरि ने अरण्य देश में कान्ता के द्वारा अनुमोदित होकर श्रेष्ठ सरोवर का निर्माण कर उस में समस्त तीर्थों का आकर्षण किया, इसलिये वे श्रीकृष्ण करके कहे जाते हैं। सम्बोधन में "हे कृष्ण" ॥ ५ ॥

श्रीकृष्ण राधिका के प्रेम से आवद्ध होकर यमुना के तट कानन में लीला से ललित होकर विराजमान हैं। अतएव धीरगण उन्हें कृष्ण करके कीर्त्तन करते हैं। सम्बोधन में "हे श्रीकृष्ण" ॥ ६ ॥

श्रीहरि ने गोकुल में विराजमान होकर हृष्ट-पुष्ट अरिष्टासुर का वध किया। उन श्रीहरि को जिसने अत्युच्च रसों से गान किया है वह श्रीराधा "हरा" हैं। सम्बोधन में "हे हरे" ॥ ७ ॥

श्रीराधिका प्रीति के द्वारा हरिचेष्टाओं को दान कराती हैं तथा स्वयं गान करती हैं, अतएव रसविचक्षण धीरों के द्वारा "हरा" करके मानी जाती हैं। सम्बोधन में "हे हरे" ॥ ८ ॥

रसावेशपरिस्रस्तां जहार मुरलीं हरेः ।
हरेति कीर्त्तिता देवी विपिने केलिलम्पटा ॥ ९ ॥
गोवर्द्धनदरीकुञ्जे परिरम्भविचक्षणः ।
श्रीराधां रमयामास रामस्तेन मतो हरिः ॥ १० ॥
हन्ति दुःखानि भक्तानां राति सौख्यातिचान्वहम् ।
हरा देवी निगदिता महाकरुणशालिनी ॥ ११ ॥
रमते भजतो चेतः परमानन्दवारिधौ ।
अत्रेति कथितो रामः श्यामसुन्दरविग्रहः ॥ १२ ॥
रमयत्यच्युतं प्रेम्णा निकुञ्जवनमन्दिरे ।
रामा निगदिता राधा रामो युतस्तया पुनः ॥ १३ ॥

देवी श्रीराधिका ने केलिपरायण होकर विपिन में रसावेश से उन्मत्त श्रीहरि की मुरली का हरण किया अतएव "हरा" करके प्रसिद्धा हैं। सम्बोधन में "हे हरे" ॥ ९ ॥

श्रीहरि गोवर्द्धन पर्वत की कन्दरा के कुञ्जों में आलिंगन परिरम्भण में विचक्षण होकर श्रीराधिका को रमण कराने के कारण "राम" हैं। सम्बोधन में "हे राम" ॥ १० ॥

परमकरुणामयी देवी श्रीराधिका भक्तों के दुःखों का हरण कर परम अनुगत सौख्य को प्रदान करती हैं अतएव वे "हरा" करके कही जाती हैं। सम्बोधन में "हे हरे" ॥ ११ ॥

जिनके भजन से भजनकारिओं का चित्त परम आनन्द सागर में रमण करता है "वह श्यामसुन्दर विग्रह श्रीहरि "राम" करके कहे जाते हैं। सम्बोधन में "हे राम" ॥ १२ ॥

श्रीराधा निकुञ्जवन मन्दिर में प्रीति के साथ अच्युत श्रीहरि को रमण कराने के कारण "रामा" करके कही जाती हैं। उन रामा श्रीराधा से युक्त श्रीहरि "राम" हैं। सम्बोधन में "हे राम" ॥१३॥

रोदनैर्गोकुले दावानलमाशयति ह्यसौ ।
विशोषयति तेनोक्तो रामो भक्तसुखावहः ॥ १४ ॥
निहन्तुमसुरान् यातो मथुरापुरमित्यसौ ।
तदागमद्रहः कामो यस्याः साऽसौ हरेति च ॥ १५ ॥
आगत्य दुःखहर्त्ता यो सर्वेषां ब्रजवासिनाम् ।
श्रीराधाहारिचरितो हरिः श्रीनन्दनन्दनः ॥ १६ ॥

इति श्रीजीवगोस्वामिना विरचिता
हरिनामव्याख्या समाप्ता ।

गोकुल जनों के रोदन से दुःखित होकर श्रीकृष्ण ने दावानल का भक्षण कर उसे विशेष रूप से शोषण किया । इसलिये भक्त सुखावह वे "राम" करके कहे जाते हैं । सम्बोधन में "हे राम" ॥१४॥

श्रीकृष्ण असुरों का संहार के लिये मथुरापुर में गये, परन्तु एकान्त में वे व्रज में आकर जिन से मिले हैं वह श्रीराधा "हरा हैं। सम्बोधन में "हे हरे" ॥ १५ ॥

जो नन्दनन्दन श्रीकृष्ण ने मथुरा से आकर समस्त व्रजवासियों के दुःख का हरण किया वे श्रीराधिका के मनोहर चरित्र वाले श्रीहरि हैं । सम्बोधन में "हे हरे" ॥ १६ ॥

हरे कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति मुख्यान्
महाश्चर्य्य-नामावली सिद्धमन्त्रान् ।
कृपामूर्त्तिचैतन्यदेवोपगीतान्
कदाभ्यस्य वृन्दावने स्यां कृतार्थः ॥

वृन्दावनशतके ।

श्रीलश्रीरघुनाथदासगोस्वामिप्रभुकृता

—: श्रीहरिनाममहामन्त्रस्य व्याख्या :—

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

श्रीलदासगोस्वामिप्रभुकृतोऽस्यार्थः।

एकदा कृष्णविरहाद्ध्यायन्ती प्रियसङ्गमम्।
मनो बाष्पनिरासार्थं जल्पतीदं मुहुर्मुहुः॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

१। "हे हरे" स्वमाधुर्य्येण मच्चेतो हरसि।

२। तत्र हेतुः "हे कृष्ण" इति। कृष् शब्दस्य सर्व्वार्थः नश्च आनन्दस्वरूप इति स्वार्थे नः। सच्चिदानन्द-स्वरूपक इति स्वीयेन सार्व्वदिकपरमानन्देन सर्व्वाधिकपरमानन्देन वा प्रलोभ्य इति भावः॥

३। ततश्च "हे हरे" धैर्य्यलज्जागुरुभयादिकमपि हरसि।

४। ततश्च "हे कृष्ण" स्वगृहेभ्यो वनं प्रति मामाकर्षसि।

एक दिवस श्रीकृष्णविरह से पीडिता श्रीवृषभानुनन्दिनी उन प्राणवल्लभ की मिलन चिन्ता करती हुई मन की व्यथा दूर करने के लिये इन शब्दों को बार बार जप करने लगीं। हरेकृष्ण इत्यादि।

(१) हे हरे! तुम निज मधुरता के द्वारा मेरे चित्त को हरण करते हो। (२) इसका कारण यह है-"हे कृष्ण"। कृष् शब्द का अर्थ समस्त तथा ण शब्द का अर्थ आनन्द स्वरूप है। स्वार्थ में न प्रत्यय है। सब से अधिकतम श्रेष्ठ आनन्द के द्वारा लुब्ध करते हो। (३) अनन्तर हे हरे! तुम मेरा धैर्य्य, लज्जा तथा गुरुजनों का भयादिक हरण करते हो। (४) उसके अनन्तर हे कृष्ण! तुम मुझ को निज गृह से वन के लिये आकर्षण करते हो। (५) अन-

५ । ततश्च "हे कृष्ण" वनं प्रविष्टाया मे कञ्चुकीं सहसैवागत्य कर्षसि ।

६ । ततश्च "हे कृष्ण" मत्कुचौ कर्षसि (नखैराकर्षसि) ।

७ । ततश्च "हे हरे" स्ववाहुनिवद्धां मां पुष्पशय्यां प्रति हरसि ।

८ । ततश्च "हे हरे" तत्र निवेशिताया मे अन्तरीयमपि वलाद्धरसि ।

९ । "हे हरे" अन्तरीयवसनहरणमिषेणात्मविरहपीडां सर्वामेव हरसि ।

१० । ततश्च "हे राम" स्वच्छन्दं मयि रमसे ।

११ । ततश्च "हे हरे" यदवशिष्टं किञ्चिन्मे वाम्यमासीत्तदपि हरसि ।

१२ । ततश्च "हे राम" मां रमयसि स्वस्मिन् पुरुषायितामपि करोषि ॥

१३ । ततश्च "हे राम" रमणीयचूडामणे ! तव नवीनवक्त्रमाधुर्य्यमपि निःशङ्कं तदात्मानं तव रामणीयकं मन्नयनाभ्यां द्वाभ्यामेवास्वाद्यते इति भावः ॥

न्तर हे कृष्ण ! जब मैं वन में प्रवेश करती हूँ तब तुम हठात आ कर मेरी कँचुली को खींचते हो । (६) अतः परं हे कृष्ण ! तुम मेरे स्तनद्वय का आकर्षण अर्थात् नखों के द्वारा चिह्नित करते हो । (७) उस के पश्चात् हे हरे ! तुम मेरे को निज भुजपाश में बाँध कर पुष्पशय्या के पास ले जाते हो । (८) अनन्तर हे हरे ! उस पुष्पशय्या में शयनकारिणी मेरे अधोवसन को हरण करते हो । (९) पश्चात् हे हरे ! तुम अधोवसन के हरण छल से आत्म-विरहजनित समस्त व्यथा को हरण करते हो । (१०) उसके पश्चात् हे राम ! तुम स्वच्छन्द रूप से मुझ में रमण करते हो । (११) अनन्तर हे हरे ! मेरी जो कुछ वामता थी अर्थात् विपरीत भाव था उसको भी हरण करते हो । (१२) अनन्तर हे राम !

१४। ततश्च "हे राम" केवलं रमणरूपेणापि रमणकर्त्तृरमणप्रयोजकः किन्तु तद्भावरूपा (रतिपूर्णेव) रतिमूर्त्तिरिव त्वं भवसीति भावः ॥

१५। ततश्च "हे हरे" मच्चेतनामृगीमपि हरसि, आनन्दमूर्च्छां प्रायसीति भावः ॥

१६। यतो "हे हरे" सिंहस्वरूप, तदापि रतिकर्म्मणि प्रकटितमहाप्रागल्भ्य इति भावः ॥

१७। एवम्भूतेन त्वया प्रेयसा वियुक्ता क्षणमपि कल्पकोटीमिव कथं यापयितुं प्रभवामीति स्वयमेव विचारय इति नाम षोडशकस्याभिप्रायः। ततश्च नामभिश्चुम्बकैरिव कृष्णः कृष्णया सह सैवाकृष्टो मिलितपरमानन्द एव। तस्याः स्वसखीनां तत्परिवार-

---

तुन मुझ में रमण करते हो तथा हम को तुम में रति प्रदान के द्वारा पुरुषायिता अर्थात् पुरुषतुल्य करते हो। (१३) हे राम! तुम समस्त रमणीय वस्तु के शिरोमणि अर्थात् श्रेष्ठ हो। इसलिये तुम्हारे नवीन मुख माधुर्य्य तथा रमणीय भाव मेरे दोनों नेत्र से निःशङ्क आस्वाद्यमान होते हैं। (१४) हे राम! तुम रमण रूप होने पर भी केवल रमणकर्त्ता नहीं हो किन्तु उस भाव रूप मूर्त्तिमान परिपूर्ण रति स्वरूप भी हो। (१५) हे हरे! उसके पश्चात् मेरी चेतना रूपिणी मृगी को हरण करते हो अर्थात् आनन्द के हेतु मूर्च्छाग्रस्त कराते हो। (१६) इसके अनन्तर हे हरे! तुम सिंह स्वरूप हो। अतः क्रीडाविलास में महान् प्रगल्भता को प्रकट करते हो। (१७) हे प्रियतम! इस प्रकार प्राणवल्लभ तुम्हारे वियोग से उत्तप्ता मैं क्षण काल को भी कल्पकोटि की भाँति जानती हुई किस प्रकार समय बिताऊँगी इस का विचार तुम स्वयं करो ऐसा षोडश नाम का अभिप्राय है। अनन्तर इन नाम रूप चुम्बकों से श्रीकृष्ण आकृष्ट होकर परमानन्द के साथ श्रीराधिका के सह मिलते

वर्गस्य तद्भावसाधकानामर्व्वाचीनानामपि श्रीराधाकृष्णौ मानसं सम्पूरयत इति ।

"ह्" कारे ललिता ख्याता "रे" कारे च श्रीदामकः ।
विशाखा च "कृ" कारे तु सुदामा च "ष्ण" कारके ॥१॥
सुचित्रापि "ह" कारे च "रे" कारेऽपि सुदामकः ।
"कृ" कारे चम्पकलता "ष्ण" कारे किङ्किणी तथा ॥२॥
तुंगविद्या "कृ" कारे च सुबलश्च "ष्ण" कारके ।
इन्दुलेखा "कृ" कारे च स्तोककृष्णः "ष्ण" कारके ॥३॥
"ह्"कारे रङ्गदेवी च "रे" कारे गोप अर्ज्जुनः ।
"ह"कारे शशिरेखा च "रे" कारे च वरूथपः ॥ ४ ॥
"ह"कारे वसुदेवी च "रे" कारे उज्ज्वलस्तथा ।
हरिप्रिया च "रा" कारे "म" कारे च सुभानकः ॥५॥
"ह"कारे विमलादेवी "रे" कारे वृषभस्तथा ।
"रा"कारे पालिका चैव विमलश्च "म" कारके ॥६॥
"रा"कारे मञ्जुरी नाम्नी देवव्रतो "म" कारके ।
"रा"कारे मधुमती च "म" कारे तु महाबलः ॥७॥
"ह्"कारे श्यामला ख्याता "रे" महाबाहुरेव च ।
"ह"कारे मङ्गलादेवी "रे" कारे च सुमेधसः ॥८॥
इत्यादि हरिनामाख्या गोपाश्च गोपनायिकाः ।
हरिनामानुसेविनां कुञ्जकुट्यान्तः संस्थितिः ॥ ९ ॥

इति श्रीदासगोस्वामिना विरचितं श्रीहरिनाममहामन्त्र-व्याख्यानं समाप्तम्

हैं । पश्चात् राधिका की सखियों का परिवारवर्ग, तथा उस भाव के साधक अर्व्वाचीनों का मानस श्रीराधाकृष्ण के द्वारा सम्पूर्ति प्राप्त होने लगा ।

प्रथम श्लोक से नवम श्लोक पर्य्यन्त अर्थ सरल है ।

श्रीलगोपालगुरुगोस्वामिकृता

श्रीहरिनाममहामन्त्रस्य व्याख्या

विज्ञाप्य भगवत्तत्त्वं सच्चिदानन्दविग्रहम् ।
हरत्यविद्यां तत्कार्य्यमतो हरिरिति स्मृतः ॥ १ ॥
आनन्दैकसुखः श्रीमान् श्यामः कमललोचनः ।
गोकुलानन्दनो नन्दनन्दनः कृष्ण ईर्य्यते ॥ २ ॥
वैदग्धीसारसर्व्वस्वं मूर्त्तलीलाधिदैवतम् ।
श्रीराधां रमयन्नित्यं राम इत्यभिधीयते ॥ ३ ॥
अज्ञान-तत्कार्य्यविनाशहेतोः सुखात्मनः श्यामकिशोरमूर्त्तेः ।
श्रीराधिकाया रमणस्य पुंसः स्मरन्ति नित्यं महतां महान्तः ॥४॥
विलोक्य तस्मिन् रसिकं कृतज्ञं
जितेन्द्रियं शान्तमनन्यचित्तम् ।
कृतार्थयन्ते कृपया सुशिष्यं
प्रदाय नाम प्रिय-युक्तपथ्यम् ॥ ५ ॥

---

(१) सच्चिदानन्द विग्रह भगवत्तत्व को जना कर अविद्या तथा उस का कार्य्य (संसार) का हरण करते हैं इसलिये उन को "हरि" करके स्मरण किया जाता है । (२) एक मात्र आनन्द के विनोदी, लक्ष्मीमान्, कमलनयन, गोकुल के आनन्दप्रद, नन्दनन्दन, श्याम-सुन्दर ही "श्रीकृष्ण" शब्द से कहे जाते हैं । (३) जो श्रीहरि सर्वोत्तम, रसिक चूडामणि, लीला के मूर्त्तिमान् अधिष्ठातृदेव हैं तथा जो नित्य श्रीराधिका को आनन्द प्रदान करते हैं, वे श्रीहरि "राम" करके कथित होते हैं । (४) अज्ञान तथा उसके कार्य्य जन्म मरणादि विनाश के लिये बड़े बड़े महात्मागण सुखात्मा, श्याम-किशोरमूर्त्ति, श्रीराधिकारमण, परम पुरुष का स्मरण करते हैं । (५) श्रीभगवान् में रसिक, कृतज्ञ, जितेन्द्रिय, शान्त, अनन्यचित्त

हरति श्रीकृष्णमनः कृष्णाह्लादस्वरूपिणी ।
ततो हरेत्यनेनैव श्रीराधा परिगीयते ॥ ६ ॥
कृषिर्भूवाचकः शब्दो णश्च निर्वृतिवाचकः ।
तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते ॥ ७ ॥
रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि ।
इति रामपदेनासौ परब्रह्माभिधीयते ॥ ८ ॥
रासादिप्रेमसौख्यार्थं हरेर्हरति या मनः ।
हरा सा गीयते सद्भिर्वृषभानुसुता परा ॥ ९ ॥
ब्रह्मेशादीन्महेन्द्रश्च यमं वरुणमेव च ।
प्रगृह्य हरते यस्मात्तस्माद्धरिरिहोच्यते ॥ १० ॥

तथाहि क्रमदीपिकायां चन्द्रं प्रति श्रीकृष्णः ।-

मम नाम शतेनैव राधानाम सदुत्तमम् ।
यः स्मरेत्तु सदा राधां न जाने तस्य किं फलम् ॥ ११ ॥

निज शिष्य को साधुगण योग्य जानकार उनके प्रिय, मंगलकर श्रीहरिनाम का प्रदान कर कृतार्थ करते हैं । (६) श्रीकृष्ण की ह्लादिनीशक्ति श्रीराधा श्रीकृष्ण का चित्त हरण करती हैं, इसलिये "हरा" शब्द के द्वारा श्रीराधिका कही जाती हैं। (७) "कृषि" शब्द भू अर्थात् सत्तावाचक और "ण" शब्द सुखार्थक है। इन दोनों शब्द के मिलन से नित्य सुखवाचक श्री "कृष्ण" पद व्युत्पन्न है उससे परब्रह्म अभिहित होता है । (८) योगिगण अनन्त, चिन्मय, सत्यानन्द स्वरूप, परवस्तु में रमण करते हैं इसलिये "राम" पद से परब्रह्म का कथन है । (९) जो रासादि प्रेमसुख के लिये श्रीहरि का मन हरण करती हैं वह श्रेष्ठा वृषभानुनन्दिनी "हरा' नाम से प्रसिद्धा हैं । (१०) ब्रह्मा, महेश्वर, महेन्द्र, यम, वरुणादि को बलपूर्वक हरण करने के कारण वे श्यामसुन्दर "हरि" नाम से

१। हरे-कृष्णस्य मनो हरति इति हरा राधा, तस्याः सम्बोधने हे हरे।

२। कृष्ण-राधाया मनो कर्षतीति कृष्णः तस्य सम्बोधने हे कृष्ण।

३। हरे-कृष्णस्य लोकलज्जाधैर्य्यादि सर्वं हरतीति हरा राधा तस्याः सम्बोधने हे हरे।

४। कृष्ण-राधाया लोक लज्जाधैर्य्यादि सर्वं कर्षतीति कृष्णः तस्य सम्बोधने हे कृष्ण।

५। कृष्ण-यत्र यत्र राधा तिष्ठति गच्छति वा तत्र तत्र सा पश्यति कृष्णो मां स्पृशति, बलात् कञ्चुकादिकं सर्वं कर्षति हरतीति कृष्णः तस्य सम्बोधने हे कृष्ण।

प्रसिद्ध होते हैं। (११) क्रमदीपिका नामक ग्रन्थ में चन्द्र के लिये श्रीकृष्ण का वचन यह है—मेरे शत नाम के साथ तुलना करने पर राधा नाम अत्युत्तम होता है। जो सर्वदा श्रीराधिका का स्मरण करता है उस का जो फल है उसको मैं नहीं जानता हूँ। अर्थात् वह फल मेरा दुर्ज्ञेय है।

नाममन्त्र व्याख्या—

(१) जो, श्रीकृष्ण के मन हरण करती हैं वह हरा अर्थात् राधा हैं, सम्बोधन में "हे हरे"। (२) जो, राधिका के मन का आकर्षण करते हैं, वे श्रीकृष्ण हैं उन का सम्बोधन में "हे कृष्ण"। (२) श्रीराधा श्रीहरि के लोक लज्जा, धैर्य्यादि को हरण करती हैं, इसलिये वह हरा हैं, सम्बोधन में "हे हरे"। (४) राधिका के लोक लज्जाधैर्य्यादिक समस्त आकर्षण करने के कारण श्रीहरि श्रीकृष्ण हैं, उनके सम्बोधन में हे "कृष्ण"। (५) श्रीराधा जहाँ जहाँ रहती हैं अथवा जहाँ जहाँ गमन करती हैं वह उन उन स्थान में देखती हैं कि श्रीकृष्ण मुझ को स्पर्श करते हैं, तथा बल पूर्वक व-

६। कृष्ण–पुनर्हर्षतां गमयति वनं कर्षतीति कृष्णः तस्य सम्बोधने हे कृष्ण।

७। हरे–यत्र कृष्णो गच्छति तिष्ठति वा तत्र तत्र पश्यति राधा ममाग्रे पार्श्वे सर्व्वत्र तिष्ठति इति हरा राधा, तस्याः सम्बोधने हे हरे।

८। हरे–पुनस्तं कृष्णं हरति स्वस्थानमभिसारयतीति हरा राधा, तस्याः सम्बोधने हे हरे।

९। हरे–कृष्णं वनं हरति वनमागमयतीति हरा राधा, तस्याः सम्बोधने हे हरे।

१०। राम रमयति तां नर्म्मनिरीक्षणादिनेति रामः तस्य सम्बोधने हे राम।

११। हरे–तात्कालिकं धैर्य्यावलम्बनादिकं कृष्णस्य हरति इति हरा राधा, तस्याः सम्बोधने हे हरे।

स्त्राकर्षण करते हैं इसलिये वे कृष्ण हैं सम्बोधन में "हे कृष्ण!" (६) पुनः पुनः आनन्द प्रदान कराकर वन के लिये खींच कर ले जाते हैं इसलिये वे श्रीकृष्ण हैं सम्बोधन में हे "कृष्ण"। (७) श्रीकृष्ण जहाँ जहाँ जाते हैं अथवा रहते हैं, वे वहाँ वहाँ देखते हैं कि श्रीराधा मेरा समक्ष-पार्श्वदेश में सर्वत्र रहती हैं, इसलिये हरा शब्द से राधिका हैं सम्बोधन में हे हरे। (८) फिर उन कृष्ण को हरण करती हैं और अपने स्थान में अभिसार कराती हैं इसलिये हरा शब्द से श्रीराधा हैं, सम्बोधन में "हे हरे"। (९) श्रीकृष्ण को वन के लिये हरण कर आगमन कराती हैं इसलिये हरा शब्द से श्रीराधा हैं सम्बोधन में "हे हरे"। (१०) श्रीराधिका को परिहास तथा दर्शन आदि के द्वारा रमण कराते हैं इसलिये वे राम हैं सम्बोधन में "हे राम"। (११) श्रीकृष्ण के तात्कालीन धैर्य्यधार-

१२। राम–चुम्बनस्तनकर्षणालिङ्गनादिभिः रमते इति रामः, तस्य सम्बोधने हे राम।

१३। राम–पुनस्तां पुरुषोचितां कृत्वा रमयतीति रामः, तस्य सम्बोधने हे राम।

१४। राम–पुनस्तत्र रमते इति रामः, तस्य सम्बोधने हे राम।

१५। हरे–पुनः रासान्ते कृष्णस्य मनो हृत्वा गच्छतीति हरा राधा, तस्याः सम्बोधने हे हरे।

१६। हरे–राधाया मनो हृत्वा गच्छतीति हरिः कृष्णस्तस्य सम्बोधने हे हरे।

णादि हरण करती हैं, इसलिये हरा "श्रीराधा" हैं सम्बोधन में "हे हरे"। (१२) चुम्बन, स्तनाकर्षण तथा आलिङ्गनादि के द्वारा स्वयं रमण अर्थात् आनन्दलीलाकारी हैं,इसलिये वे हरि"राम"हैं, सम्बोधन में "हे राम"। (१३) श्रीराधिका को पुरुष की भाँति करा कर रमण अर्थात् आनन्द उपभोग कराते हैं, इसलिये वे "राम" हैं, सम्बोधन में "हे राम"। (१४) पुनर्वार वहाँ रमण करते हैं, इसलिये श्रीहरि "राम" हैं,सम्बोधन में "हे राम"। (१५) और भी रासान्त में श्रीकृष्ण का चित्त को हरण कर गमन करती हैं, इसलिये श्रीराधा 'हरा" हैं, सम्बोधन में "हे हरे"। (१६) श्रीराधिका के चित्त को हरण कर गमन करते हैं, इसलिये "हरि" शब्द से श्रीकृष्ण हैं उस का सम्बोधन में "हे हरे"।

स्वपीतच्छटाच्छादितद्दमादिसर्व्वं
श्रुतीनामतक्याद्भुतप्रेमचर्व्वम्।
शिवब्रह्मदेवैः स्तुतं सर्ववृत्तं
तटे वारिधे नृत्यति ब्रह्म मूर्त्तम्॥
श्रीचैतन्यचन्द्रामृतटीकायाम्॥

॥ श्री श्री हरिदास ठाकुर कृत ॥

षोलनाम वत्रिशाक्षरात्मकमहामन्त्र व्याख्या

एक दिन हरिदास निर्ज्जने वसिया ।
महामन्त्र जपे हर्ष प्रेमाविष्ट हइया ॥ १ ॥
हाँसे कांदे नाचे गाय गर्ज्जे हुहुङ्कार ।
आचार्य्य गोसांइ आसि करे नमस्कार ॥ २ ॥
संकोच पाइया हइल भाव सम्वरण ।
आचार्य्य प्रणमि तिहँ अर्पिल आसन ॥ ३ ॥
वसिया आचार्य्य गोसाइ करे निवेदन ।
एक वड संशय मने करह छेदन ॥ ४ ॥
कलियुग अवतार श्रीकृष्णचैतन्य ।
चैतन्य भजये जेइ सेइ वड धन्य ॥ ५ ॥

नमश्चैतन्यचन्द्राय कोटिचन्द्राननत्विषे ।
प्रेमानन्दाब्धिचन्द्राय चारुचन्द्रांशुहासिने ॥

एक दिन हरिदास निर्जनहि बैठि ।
महामन्त्र जपें हर्ष होइ प्रेमाविष्ट ॥ १ ॥
हाँसें काँदें नाचें गावें गर्जें हुहुंकार ।
आचार्य्य गुसाईं आय करी नमस्कार ॥२॥
पाइकैं संकोच भाव-संवरन भयौ ।
आचार्य्य प्रणमि तिन्हें सुखासन दयौ ॥३॥
आचार्य्य गुसाईं बैठि करी निवेदन ।
एक बड़ौ संशै मनै करहि छेदन ॥ ४ ॥
"कलिजुग अवतार श्रीकृष्ण चैतन्य ।
चैतन्य भजहि जोई सोई बड़ौ धन्य" ॥५ ॥

तुमि हओ चैतन्येर पार्षद-प्रधान।
श्रीकृष्णचैतन्य छाडि केन गाओ आन॥ ६॥
अथवा कि मर्म्म जानि प्रेमानन्दे भास।
सर्वजीवे हरिनाम केन उपदेश॥ ७॥
निवेदये हरिदास करि कर जोड़े।
तत्त्व तत्त्ववेत्ता तुमि केन पुछ मोरे॥ ८॥
किंवा छल आचरह पामर शोधिते।
निवेदन करि शुन जाहा प्रेम चिते॥ ९॥
कलियुगे श्रीकृष्णचैतन्य गूढ़ अवतार।
कोटि समुद्र गम्भीर नाम लीला जाँर॥ १०॥
गुरुभावे कराय तिहँ आपना यजने।
हरिनाम महामन्त्र दिल सर्वजने॥ ११॥

"तुम हौ चैतन्य के पार्षद प्रधान।
चैतन्य कों छाड़ि तुम गाओ कैसें आन?" ॥६॥
"अथवा कि कर्म्म जानि प्रेमानन्द भोय।
जीव-मात्र हरिनाम उपदेश होय?" ॥ ७॥
निवेदहि हरिदास दोऊ कर जोरे।
तत्त्व, तत्त्ववेत्ता तुम्हीं, कस पूँछौ मोरे? ॥८॥
किंवा छल करि यहि पामरहि शोधौ।
निवेदन करौं सोई जो चित प्रबोधौ॥ ९॥
"गूढ़ अवतार कलि श्री कृष्ण चैतन्य।
कोटि समुद्र गंभीर नाम-लीला धन्य!" ॥१०॥
गुरु-ज्यों कराय लोक अपुनौ यजन।
हरिनाम महामन्त्र दियौ सर्व्व जन॥ ११॥

श्रीकृष्णचैतन्य कलियुग अवतार ।
हरिनाम महामन्त्र युगधर्म्म सार ॥ १२ ॥
महामन्त्रे श्रीकृष्णचैतन्य भिन्न कभु नय ।
नाम नामी भेद नाहि सर्वशास्त्रे कय ॥ १३ ॥
हरे—भानुसुता जेइ कृष्णप्रिया शिरोमणि ।
श्रीचैतन्यरूपे एवे हरे करि मानि ॥ १४ ॥
कृष्ण—नन्दसुत बलि जारे भागवते गाइ ।
सेइ कृष्ण एवे एइ चैतन्य गोंसाइ ॥ १५ ॥
हरे—व्रजेर सर्व्वस्व हरि नदे अवतार ।
एइ हेतु चैतन्येर हरे नाम आर ॥ १६ ॥
कृष्ण-जीव हृदि कर्पिया रोपिल भक्तिबीज ।
अतएव चैतन्येर कृष्ण नाम निज ॥ १७ ॥

श्रीकृष्ण चैतन्य कलियुग अवतार ।
हरिनाम महामन्त्र युगधर्म्म-सार ॥ १२ ॥
महामन्त्र श्रीकृष्णचैतन्य भिन्न नाँय ।
नाम नामी भेद नाँहि सर्व्व शास्त्र माँय ॥१३॥
हरे—भानुसुता जोहैं कृष्ण-प्रिया शिरोमणि ।
श्रीचैतन्य रूप सोई "हरे" करि मानि ॥ १४ ॥
कृष्ण—नन्दसुत बलि जिन्हें भागवत गाइ ।
सोई कृष्ण भये येही चैतन्य गुसाईं ॥ १५ ॥
हरे—व्रज सर्व्वस्व हरि नदिया-औतार ।
येही हेतु चैतन्य "हरे" नाम धार ॥ १६ ॥
कृष्ण—जीव-हृदै माँहि जिन्ह रोप्यौ भक्ति-बीज ।
ताही सों चैतन्य-प्रभु "कृष्ण" नाम निज ॥१७॥

कृष्ण—कृष्णवर्ण कृष्णमय ये कृष्ण-वरण।
अतएव ताँर नाम कृष्ण-निरूपण ॥ १८ ॥

कृष्ण—न्यासि वेशे आकर्षिल पाषण्डिर गण।
एइ हेतु कृष्ण नाम ताँहार गणन ॥ १९ ॥

हरे—स्वमाधुर्य्ये हरे तिहँ भक्तगण प्राण।
हरे नाम चैतन्येर करये व्याख्यान ॥ २० ॥

हरे—स्वभक्ते हरिते हय आपनि हरण।
श्री चैतन्य हरे नाम करिल ग्रहण ॥ २१ ॥

हरे—स्वप्रिया हरिया कृष्ण कैल अवतार।
श्रीकृष्णचैतन्य हरे कलि युगे सार ॥ २२ ॥

राम—दोंहे मिलि नवद्वीपे रमे अभिराम।
अतएव श्रीचैतन्य कलियुगे राम ॥ २३ ॥

कृष्ण—कृष्णवर्ण कृष्णमय जो कृष्ण-वरण।
अतएव तासु नाम "कृष्ण" निरूपण ॥ १८ ॥

कृष्ण—न्यासि वेष धरि खेंचे जो पाखण्डि-गन।
यही हेतु "कृष्ण" नाम तिनकौ गणन ॥ १९ ॥

हरे—स्व-माधुर्य्य हरे जिन भक्तगण-प्राण।
"हरे" नाम चैतन्य कौ करूँ व्याख्यान ॥ २० ॥

हरे-स्व भक्त हरें और अपुन हिराँय।
श्री चैतन्य "हरे" नाम यासों कहे जाँय ॥ २१ ॥

हरे-स्व-प्रिया हरण करि लियौ कृष्ण औतार।
श्री कृष्ण चैतन्य "हरे" कलियुग सार ॥ २२ ॥

राम-दोऊ मिलि नवद्वीप रमे अभिराम।
अतएव कलियुग श्री चैतन्य "राम" ॥ २३ ॥

हरे—हरये चैतन्य जीवेर सर्व्व अमङ्गल ।
अतएव हरिनाम सर्व्व सुमङ्गल ॥ २४ ॥
राम—स्वभक्त हृदये किवा करये रमण ।
अतएव राम नाम करये वहन ॥ २५ ॥
राम—आपना रमिते निज स्वत उठे काम ।
अतएव श्रीचैतन्य धरे राम नाम ॥ २६ ॥
राम—कौशल्यानन्दन जिनि त्रेताय श्रीराम ।
सार्व्वभौमे देखाइया धरे राम नाम ॥ २७ ॥
हरे—स्वमाधुर्य्ये हरिल मन तेंइ अवतार ।
अतएव हरे नाम हइल ताँहार ॥ २८ ॥
हरे—स्वभावे हेरिया चित्त कूर्म्माकृति हइल ।
अतएव हरे नाम जगते घोषिल ॥ २९ ॥

हरे-हरहिं चैतन्य जीव-सर्व्व-अमंगल ।
अतएव "हरे" नाम सर्व्व सुमंगल ॥ २४ ॥
राम-स्वभक्त हृदय सदा करहिं रमण ।
अतएव "राम" नाम करहिं वहन ॥ २५ ॥
राम-आपुहिं रमहिं स्वतः दूर करि काम ।
अतएव श्री चैतन्य धरे "राम" नाम ॥ २६ ॥
राम-त्रेता में जु कौशिलानन्दन रहे राम ।
सार्व्वभौमें दिखाय सो धरयो "राम" नाम ॥२७॥
हरे-स्वमाधुर्य्य हरयौ मन तिहीं अवतार ।
अतएव "हरे" नाम चैतन्य विस्तार ॥ २८ ॥
हरे-स्वभावहिं हरि चित्त कूर्म्मा कृति भये ।
याही सों चैतन्य "हरे" नाम जग कहे ॥ २९ ॥

हरिनामेर गूढ़ अर्थ करिल प्रकाश ।
आगम निगम याँर नाहि जाने आश ॥ ३० ॥

आर एक गूढ़ अर्थ आछये इहार ।
शुनह श्रीपाद सर्व्व अर्थ तत्त्व सार ॥ ३१ ॥

महामन्त्रे षोल नाम तिन नाम सार ।
तिन नाम हइते षोल नामेर विस्तार ॥ ३२ ॥

हरे—साक्षात् श्रीहरि कलौ चैतन्य गोसाइँ ।
अतएव हरे एवे ताँर नाम गाइ ॥ ३३ ॥

राम—श्री नित्यानन्द गोसाइँ राम अवतार ।
तेइँ राम नाम ताँर विदित संसार ॥ ३४ ॥

कृष्ण—कृष्ण अंशे अवतीर्ण द्वितीय स्कन्ध ।
ते कारण कृष्ण नाम बुझ अनुबन्ध ॥ ३५ ॥

हरिनाम गूढ़ अर्थ करेहुँ प्रकाश ।
आगम-निगम जाहि नहीं ज्ञान आश ॥ ३० ॥
औरौ एक गूढ़ अर्थ याकौ निरधार ।
सुनहु श्रीपाद सर्व्व-अर्थ तत्त्व-सार ॥ ३१ ॥
सोलहै नाम महामन्त्र तीन नाम सार ।
तीन नाम ही सों होय सोलहै कौ विस्तार ॥३२॥
हरे-साक्षात् श्री हरि कलौ चैतन्य गुसाईं ।
अतएव "हरि" कहि ताकौ नाम गाइँ ॥ ३३ ॥
राम-श्री नित्यानन्द गुसाईं "राम" अवतार ।
तिहि "राम" नाम सों है विदित संसार ॥ ३४ ॥
कृष्ण-कृष्णांश अवतीर्ण कह्यौ दूसरे स्कंध ।❀
ताही सों कृष्ण-नाम बूझौ अनुबन्ध ॥ ३५ ॥

मतान्तरे षोल नाम चारि नाम सार।
चारि नाम हइते पञ्च तत्त्वेर प्रचार॥ ३६॥
कृष्ण—स्वयं श्रीकृष्ण हय चैतन्य गोसाइँ।
अतएव ताँर नाम कृष्ण करि गाइ॥ ३७॥
रसराज महाभाव दुइ एक रूप।
अतएव श्रीचैतन्य कृष्णेर स्वरूप॥ ३८॥
राम—वलराम अवतार निताइ ठाकुर।
अतएव राम नाम प्रेम-रस-पुर॥ ३९॥
अथवा यथेष्ट करे स्वप्रेष्ठ रमण।
नित्यानन्द राम तेइँ गाय भक्तगण॥ ४०॥
रमा शक्ति श्री अनङ्ग ताँर अवतार।
अतएव नित्यानन्द राम नाम सार॥ ४१॥

मतान्तरहिं सोल्है नाम चारि नाम सार।
चार नाम सों ही पञ्च तत्त्व कौ प्रचार॥ ३६॥
कृष्ण-स्वयं श्री कृष्ण भये चैतन्य गुसाईं।
अतएव तिहि नाम "कृष्ण" करि गाईं॥ ३७॥
रसराज महाभाव दोनों एक रूप।
अतएव श्री चैतन्य श्री"कृष्ण" स्वरूप॥ ३८॥
राम-बलराम अवतार निताई ठाकुर।
अतएव "राम" नाम प्रेम रस पूर॥ ३९॥
अथवा यथेष्ट करें स्व प्रेष्ठ रमन।
नित्यानन्द "राम" जासों गावें भक्त जन॥ ४०॥
रमा शक्ति श्री अनङ्ग ताकौ अवतार।
अतएव नित्यानन्द "राम" नाम सार॥ ४१॥

हरे—अद्वैत हरिणाद्वैत भक्ति शंसने ।
अतएव हरे नाम तोमार अभ्याने ॥ ४२ ॥
हरिया आनिल दोहाँ नदीया नगर ।
अतएव हरेनाम हइल तोमार ॥ ४३ ॥
हरे—भानुसुता अवतार गदाइ पण्डित ।
हरे नाम ताँर इह जगते विदित ॥ ४४ ॥
चारि नामे चतुर्मूर्त्ति सर्वशास्त्रे कय ।
चतुर्व्यूह अवतीर्ण युगे युगे हय ॥ ४५ ॥
एइ युगे चतुर्व्यूह एइ चारिजन ।
एइ सब सिद्धान्त विज्ञ ना करे लङ्घन ॥ ४६ ॥
एइ चारि ईश तत्त्व आराध्य ये जानि ।
पञ्चम से जीव तत्त्व आराधक मानि ॥ ४७ ॥

हरे-अद्वैत हरिणाद्वैत शक्ति शंसनित ।
अतएव "हरि" नाम आपको उचित ॥ ४२ ॥
हरिहिं आनेउ लैइ नदिया नगर ।
अतएव "हरि" नाम भयो है तुम्हार ॥ ४३ ॥
हरे-भानु सुता अवतार गदाई पंडित ।
"हरे" नाम तिहिं भयो जगत विदित ॥ ४४ ॥
चारि नाम चतुर्मूर्त्ति सर्व शास्त्र कहें ।
चतुर्मूर्त्ति अवतीर्ण जुग जुग होयें ॥ ४५ ॥
यहि जुग चतुर्व्यूह ये ही चारि जन ।
ये सब सिद्धान्त विज्ञ न करें लंघन ॥ ४६ ॥
ये ही चारि ईश-तत्त्व आराध्य जो जानि ।
पंचम जो जीव-तत्त्व आराधक मानि ॥ ४७ ॥

आराधना हय कृष्णेर मुख्यर कारण।
आराधना येइ करे भक्ते से गणन ॥ ४८ ॥
विशेष्य विशेषणे भक्तेर नाम हय।
कृष्ण के विशेष्य करि भक्त के निश्चय ॥ ४९ ॥
सेइ कृष्ण नन्द सुत, दास तार भृत्य।
कृष्णदास कहि कोन भक्त रूढ़ि अर्थ ॥ ५० ॥
हरे कृष्ण हरे नाम एमन भक्त जान।
विशेष्य विशेषण भक्ते कराय ज्ञान ॥ ५१ ॥
हरे कृष्ण दुइ नाम विशेष्य लक्षण।
हरे राम दुइ नाम तार विशेषण ॥ ५२ ॥
हरे भानुसुता कृष्ण व्रजेन्द्र नन्दन।
हरे राम याते से भक्तेर गणन ॥ ५३ ॥

आराधना होय एक कृष्ण सुख पाय।
आराधना करै जोई भक्तनि गिनाय ॥ ४८ ॥
विशेष्य विशेषणहिं "भक्ति" संज्ञा कहैं।
विशेष्य "श्री कृष्ण" रूप भक्त दृढ़ कहैं ॥४९॥
सोई "कृष्ण" नन्दसुत जीव दास-भृत्य।
"कृष्णदास" यासौं कहे "भक्त" रूढ़ि-अर्थ ॥ ५० ॥
हरे कृष्ण हरे नाम ऐसें भक्त जान।
विशेष्य-विशेषण भक्तहि कराय ज्ञान ॥ ५१ ॥
"हरे कृष्ण" दुइ नाम विशेष्य-लक्षण।
"हरे राम" दुइ नाम ताके विशेषण ॥ ५२ ॥
"हरे" भानुसुता "कृष्ण" व्रजेन्द्र नन्दन।
"हरे राम" जासों हो भक्तनि गणन ॥ ५३ ॥

हरे राम हरे राम भक्ते से कहय!
शुद्ध भक्त भिन्न कारो अनुभव नय ॥ ५४ ॥
भगबानेर भक्त यत श्रीवास प्रधान।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण सदा करे गान ॥ ५५ ॥
सेइ नामे हाँसे ताँरे भव्य सकले।
सेइ नामे प्रभु ताँरे प्रकाशे कौशले ॥ ५६ ॥
पूर्व्वे चारि ईश तत्त्व करेछि निर्णय।
भक्त-तत्त्व मिलि एवे पञ्च तत्त्व हय ॥ ५७ ॥
चारि नाम पञ्चतत्त्व हल निरूपन।
श्री चैतन्य कृपा जारे बुझे सेइ जन ॥ ५८ ॥
एत शुनि दोंहे दोंहे आलिङ्गन कैल।
परस्पर दोंहे दोंहार स्तुति आरम्भिल ॥ ५९ ॥

"हरे राम" "हरे राम" भक्त जो कहाऐं।
शुद्ध भक्त भिन्न आन अनुभव ना है ॥ ५४ ॥
भगवान के भक्त जिन्ह श्रीवास प्रधान।
"हरे कृष्ण" "हरे कृष्ण" सदा करें गान ॥ ५५ ॥
नाम ही सों हँसैं और हो भव्य सकल।
नाम ही सों प्रभु ताकों प्रकाशें कौशल ॥ ५६ ॥
चारि ईश-तत्त्व पीछें करे जो निर्णय।
भक्त-तत्त्व मिलि तामें पञ्च तत्त्व होंय ॥ ५७ ॥
चारि नाम पञ्च-तत्त्व भयौ निरूपण।
श्री चैतन्य कृष्ण कृपा जापैं बूझै सोई जन ॥ ५८ ॥
इतौ सुनि दोऊ दूजे आलिंगन देंहि।
दौनौ हि परस्पर गुण गान करेंहि ॥ ५९ ॥

आचार्य्य कहये तुमि भुवन मङ्गल।
श्रीचैतन्य-तत्त्व वेत्ता तुमि से केवल॥ ६०॥
हरिदास कहे प्रभु तुमि तत्त्व सार।
वेत्ता आमि, स्तुति नहे सेइ अनुसार॥ ६१॥

इति श्रीश्री हरिदासठाकुरकृत
हरिनामार्थसम्पूर्ण।

आचार्य्य कहहिं तुम "भुवन-मंगल"।
श्री चैतन्य तत्त्व ज्ञाता हौ तुम केवल॥ ६०॥
हरिदास कहें प्रभु! तुम "तत्त्व-सार"।
ऐसौ जानूँ-स्तुति न ताहि अनुसार॥ ६१॥

इति श्री श्री हरिदासठाकुरकृत "हरिनामार्थ" का हिन्द अनुवाद सम्पूर्ण।

अनुवादक—डाक्टर पूर्णचंद्रशर्म्माजी,
प्रतापपुरा (आगरा)

वृषभानुसुतावपुरेकतनुः कनकोज्वलभ्राजितपुष्पधनुः।
कृतगोपकुमारविलासभरः परिभाति विधूज्वलगौरवरः॥
निजां माधुरीं दर्पणे प्रेक्ष्य गोष्ठे
प्रियाभावमाप्तुं कलौ जातुमिष्टे।
तदास्वादनप्रोल्लसन्मानसोऽहं
भजे श्रीशचीनन्दनं गौरदेहम्॥
श्रीचैतन्यचन्द्रामृतदीकायाम॥

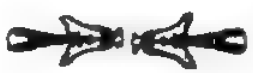

❀ श्रीचैतन्यदासजीविरचित महामंत्रव्याख्या ❀

हे हरे–माधुर्य्यगुणे हरिले जे नेत्र मने
मोहन मूरति दरशाइ।
हे कृष्ण–आनन्द धाम, महाआकर्षक ठाम,
तुया विने देखिते ना पाइ॥
हे हरे-धैरज धरि गुरु भय आदि करि,
कुलेर धरम कैले चूर।
हे कृष्ण–वंशीर स्वरे आकर्षिया आनि बोले,
देह गेह स्मृति कैला दूर॥
हे कृष्ण–कर्षिता आमि कञ्चुलि कर्षह तुमि,
ता देखि चमक मोहे लागे।
हे कृष्ण–विविध छले उरज कर्षह वले,
थिर नह अति अनुरागे॥
हे हरे–आमारे हेरि लइया पुष्प तल्प परि
विलासेर लालसे काकुति।
हे हरे–गुपत वस्त्र हरिया से क्षण मात्र
व्यक्त कर मनेर आकुति।
हे हरे वसन हर ताहाते जेमन कर
अन्तरेर हर यत वाधा।
हे राम–रमण अंग नाना वैदगधी रंग
प्रकाशि पुरह निज साधा॥
हे हरे–हरिते वली नाहि हेन कुतुहली
सभार से वाम्य ना राखिला।
हे राम–रमणरत ताहे प्रकटिया कत
किना रस आवेशे भासाइला॥

हे राम-रमणप्रेष्ठ मन रमणीय श्रेष्ठ,
तु आ सुखे आपना ना जानि।
हे राम-रमण भागे भाविते मरमे जागे
से रस मुरति तनु खानि॥
हे हरे-हरण तोर ताहार नाहिक और
चेतन हरिआ कर भोरा।
हे हरे-आमार वन्धु हर सिंह प्राय दन्ध
तोमा विने केह नाहि मोरा॥
तुमि से आमार प्राण तोमा विना नाहि जान
क्षण के कलप शत जाय।
से तुमि अनत गिया रह उदासीन हइया
कह देखि कि करि उपाय॥
ओहे नवघनश्याम केवल रसेर धाम
कैछे रह करि मन झुरे।
चैतन्य वलये जाय हेन अनुराग पाय
तारे वंधु मिलये अदूरे॥

* पदकल्पतरु-चतुर्थशाखा—पञ्चमपल्लव
१६७८ संख्यक में धृत

श्रीहरिनाम षोडश

ओं श्रीवासुदेवस्य श्रीकृष्णचन्द्रस्य षोडशनाममहामन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्द, श्रीकृष्णचन्द्रो देवता, हरे कृष्ण वीजं, हरे राम शक्तिः, श्रीवासुदेव-कृष्णचन्द्रस्य प्रीत्यर्थे हरे कृष्णेति षोडश नाम जपे विनियोगः।

अथ करन्यासः।

हरे कृष्ण अंगुष्ठाभ्यां नमः। हरे कृष्ण तर्जनीभ्यां नमः।

कृष्ण कृष्ण हरे हरे मध्यमाभ्यां वौषट् । हरे राम इति अनामिकाभ्यां नमः हुम् । हरे राम इति कनिष्ठाभ्यां वौषट् । राम राम हरे हरे इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः स्वाहा । अथ करांगुल्या न्यासं कृत्वा अङ्ग न्यासं कुर्य्यात् । हरे कृष्ण हृदयाय नमः । हरे कृष्ण शिरसे स्वाहा । कृष्ण कृष्ण हरे हरे शिखायै वौषट् । हरे राम नेत्राभ्यां वौषट् । हरे राम कवचाय हुम् । राम राम हरे हरे इत्यस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानं-त्रिभङ्गभङ्गिमरूपं वेणुरन्ध्रकराञ्चितम् ।
गोपीमण्डलमध्यस्थं शोभितं नन्दनन्दनम् ॥
राधे कृष्ण कृष्ण राधे राधामेकं शरीरकम् ।
एकोऽपि जगतां व्यापी कोटिब्रह्माण्डमण्डले ॥
पुरुषाङ्गं परित्यज्य स्त्र्यङ्गं च परिभावितः ।
राधाकृष्णमहामन्त्र गोलोके तव दर्शनम् ॥
हुंकारे कृष्ण रे राधा मकारे रामकृष्णयोः ।
हरिनाम जपेन्नित्यं सराधं राधया सह ॥

राम कृष्ण हरे । हरि प्रकृतिः । कामबीजं राधा राम प्रकृतिः चन्द्रावली रमा बीजं । कृष्णः परावीजम् ।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

हरे षोडशाक्षरं अष्टौ नामानि । कृष्ण अष्टाक्षरं चत्वारि नामानि । राम अष्टाक्षरं चत्वारि नामानि । इति नामाक्षरनिर्णयभेदः ।

अथ पुरुषप्रकृतिभेदम्—
विमला शारदा मेधा ललिता चारुकुन्तला ।
हंसी नारायणी केशी पद्मा रम्भा च सुशीला ।
सुवर्णा रङ्गिणी प्रेया श्यामला चारुकन्धरा ।

षोडशः पुंसः—
श्रीदामा च सुदामा च वसुदामा महाबलः ।
सुबाहु स्तोककृष्णौ च सुबलार्जुनः ॥

लवङ्गश्च महाबाहुः रामकृष्णौ तथैव च।
देवप्रस्थो भद्रसेनो दामा नामा प्रियो मतः॥

श्री हरिनामनिर्णयः।

ह विमलासखी । रे श्रीदामासखा । कृ शारदासखी। ष्ण सुदामासखा। ह मेधासखी। रे वसुदामासखा। कृ ललितासखी। ष्ण महाबलसखा। कृ चारुकुन्तलासखी । ष्ण सुबाहुसखा। कृ हंसीसखी। ष्ण स्तोककृष्णसखा । ह नारायणीसखी । रे सुबल-सखा। ह केशीसखी। रे अक्षयसखा। ह पद्मासखी। रे अर्ज्जुन-सखा। रा रम्भासखी। म लवङ्गसखा। ह सुशीलासखी । रे महा-बाहुसखा। रा सुवर्णासखी। म रामसखा । रा रङ्गिणीसखी। म कृष्णसखा। रा प्रेयासखी। म देवप्रस्थसखा । ह श्यामलासखी। रे भद्रसेनोसखा। ह चारुकन्यरासखी। रे दामासखा। इति हरिनाम-निर्णयभेदः॥

हकारं रक्तवर्णं च रविशक्तिः भवेद्रसः।
रविचन्द्रभवे यत्र ककरायस्य लक्षणात्॥
ककारे रक्तवर्णं च कृत्यं दुष्कृतपातकम्।
भुक्तिमुक्तिगतिश्चैव ककरायत तत्क्षणात्॥
ककारं नानाकारेण नरकादुद्धरेन्नरम्।
नरकान्ते भवे यत्र ककारान्तस्य लक्षणात्॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण नरो जपति नित्यशः।
गोलोकभुवनं गत्वा कृष्णपार्षदतां लभेत्॥
हरे राम हरे राम राम राम रटन्ति ये।
व्रजे वासो भवेत्तेषां भक्तिस्तु प्रेमलक्षणा॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्णेति यो ध्वनिः।
वैकुण्ठद्वारसोपानं नरारोहणिडिण्डिमः॥
हरे राम हरे राम राम राम रटन्ति यः।

गोलोके भुवनं याति श्री श्रीकृष्णाङ्गभोगिनी ॥
इति श्री अद्वैताचार्य्यसंग्रहणे श्रीकृष्ण-
चैतन्यप्रकाशिते श्रीनित्यानन्दमथने अच्युतानन्द आस्वादने
चतुर्थविग्रहसंपुटे हरिनामसंग्रह पटलं सम्पूर्णम् ॥

—❀—

❀ श्रीहरेकृष्णराममहामन्त्रकवचम् ❀

श्रीनित्यानन्द उवाच—

(ओं) कथय त्वं महाबाहो नाथनाथ जगद्गुरो ।
राधाकृष्णस्वरूपं च महामन्त्रं प्रकाशय ।
हरे कृष्णादिकवचं मन्त्रबीजं फलप्रदम् ।
सर्वेषां वाञ्छितं प्रेम्णा यदि योग्योऽस्मि मे वद ।

(ओं) श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्र उवाच—

अद्वैतं नाथनाथं च सर्वदेवतयास्थितम् ।
यन्नाम स्मरणाज्जन्म-मृत्युश्चैव न जायते ॥
त नाम कवचं वक्ष्ये सावधानमनाः शृणु ।
राधिकाकृष्णयोर्नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कथ्यते परमं शुभम् ।
यज्ज्ञात्वा मन्त्रबीजस्य फलमाप्नोति निश्चितम् ॥
यद्धृत्वा च महादेवो ब्रह्मादिसुरसत्तमाः ।
हरिभक्तियुताः सर्वे सर्वैश्वर्य्यमवाप्नुयुः ॥
अतिगुह्यतमं तत्वं पूजयेद्भक्तिसंयुतः ।
धर्मार्थकाममोक्षं च लभते नात्र संशयः ॥

(ओं) हकारो नासिकां पातु रे कारो वदनं तथा ।
कृ कारश्च भ्रुवोर्मध्ये ष्णकारस्तालुके तथा ॥
राकारश्चक्षुषां मध्ये मकारस्तनमध्यके ।

ओं नमो रामकृष्णाय नमः । इतिबीजं ॥

ओं (ह) शिरो मे ललिता पातु (रे) विशाखा बाहु दक्षिणे।
(कृ) कंठे तु चंपकलता (ष्ण) चित्रा वामभुजे तथा॥
(ह) पाणौ सखी रंगदेवी (रे) सुदेवी पातु पृष्ठके।
(कृ) वदने तुंगविद्या च (ष्ण) श्रवणे चेन्दुलेखिका।
(कृ) भ्रुवोर्मध्ये शशिरेखा (ष्ण) दक्षिणे विमला तथा।
(कृ) भाले च पालिका पातु (ष्ण) हृदयेऽनंगमञ्जरी।
(ह) श्यामला नाभिमध्यं तु (रे) मध्यं मधुमती तथा।
(ह) धन्या करांगुली पातु (रे) मंगलाधः प्रकीर्त्तिता।
(ह) श्रीदामा जघने पातु (रे) सुदामा चोरुयुग्मके।
(रा) वसुदामा जानुयुग्मं (म) लिंगं पातु सखार्जुनः।
(ह) सुबलो दक्षिणे पादे (रे) वामपादे च किङ्किणी।
(रा) प्राच्यां दिशस्तोककृष्णो (म) अग्नौ पातु वरूत्थपः॥
(रा) दक्षिणे चांशुकः पातु (म) विशालो नैऋते तथा।
(रा) महाबलः प्रतीच्यां तु (म) वायव्यां चोरुभस्तथा॥
(ह) देवप्रस्थो उत्तरस्यां (रे) ईशानमुज्वलस्तथा।
(ह) मूर्ध्नि पातु महाबाहुः (रे) रामोऽधो पातु मेऽनिशम्।

राधाकृष्णौ च सर्व्वाङ्गं पातां गोपीजनप्रियौ।
इति षोडशनामानि द्वात्रिंशदक्षराणि च।
वर्ण भेदा महाबीजं गोपीगोपालवेष्टितं।
हकारो हिंगुलो वर्णः सर्ववर्णधरो मतः।
ज्ञानाज्ञानकृतं पापं हकारो हरति क्षणात्।
रेकारो रक्तवर्णः स्याद्गोपालेन निरूपितः॥
गुर्व्वङ्गनाकृतं पापं रकारो दहति क्षणात्।
कृकारः कज्जलो वर्णो संहरेदुपपातकम्।
गतिशक्तिरतिप्रेम मकाराज्जायते क्षणात्।
कृकारो लोहितो वर्णो नरकादुद्धरेन्नरम्॥
जन्मजन्मार्ज्जितं पापं ष्णकारो हरते क्षणात्।

राकारो गौरवर्णः स्याद्धरशक्तिः भवेद्ध्रुवम ।
रविश्चन्द्रसमो मन्त्रः संसारोराशिमत्राणत् ।
मकारो ज्योतिरूपश्च निरञ्जनसदार्चितः ।
मिथ्यावाक्य कृतं पापं मकारो हरते क्षणात् ॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥
इति अक्षयबीजनामबीजाभ्यां नमः ।

हरे हरे हरे हरे हरे हरे हरे हरे षोडशाक्षर अष्टौ नामनि । कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण अष्टाक्षर चत्वारिनामानि । राम राम राम राम अष्टाक्षर चत्वारि नामानि । एवं षोडशनामाक्षराय नमः । षोडशाक्षर अष्ट नाम परात्परबीजाय नमः । राम नामाष्टाक्षर "मा" बीजाय नमः । कृष्ण नामाष्टाक्षर कामबीजाय नमः ।

त्रितत्त्वं चैव पञ्चात्म पुनर्माया सुभद्रया ।
एतानि तत्वबीजानि नामानि च परस्परम् ॥
बीजानां च परं बीजं श्रीराधिका प्रकीर्तिता ।
राकारे च भवेद्राधा मकारे कृष्ण उच्यते ।
हरिनामार्पितं बीज तद्राधाकृष्णयोः सदा ।
राधे कृष्ण कृष्ण राधे राधामेकं शरीरकम् ॥

एकशरीरमहामन्त्राय नमः ।

एकोऽपि जगतां व्यापी कोटिब्रह्माण्डविग्रहः ।
पुरुषाङ्गं परित्यज्या स्त्र्यङ्गं च परिभावितः ॥
राधाकृष्णमहामन्त्र गोलोके तव दर्शनम् ।

प्रकृतिभेदः—ललिता च विशाखा च तथा चम्पकमल्लिका ।
चित्रा तथा रङ्गदेवी सुदेवी च ततः परम् ।
तुङ्गविद्या चेन्दुलेखा शशिरेखा ततः परम् ।
विमला पालिकाऽनङ्गमञ्जरी श्यामला तथा ।
ततो मधुमती धन्या मङ्गला परिकीर्त्तिता ।

एतासां प्रकृतीनां तु मूलप्रकृति राधिका ॥
ततः पुरुषभेदः–श्रीदामा च सुदामा च वसुदामा ततः परम् ।
अर्जुनः सुबलश्चैव किङ्किणीस्तोककृष्णकौ ॥
वरूत्थपांशुकौ रामो विशालाक्षोऽर्भकस्तथा ।
देवप्रस्थ उज्वलश्च महाबाहु र्महाबलः ॥

एतेषां सेवा यथा—

ताम्बूले ललितादेवी कर्पूरायां विशाखिका ।
चामरे चम्पकलता चित्रा वसनसेवने ॥
रागे च रङ्गदेवी च सुदेवी जलसेवने ।
नानावाद्ये तुङ्गविद्या इन्दुरेखा च नर्त्तने ॥
दर्पणे शशिरेखा च विमला पदसेवने ।
पाली कुसुमशय्यायां वेशे चानङ्गमञ्जरी ॥
श्यामला चन्दनादौ च गाने मधुमतिस्थथा ।
धन्या रत्नविभूषणे मङ्गला माल्यसेवने ॥
इत्यादि कोटिशो गोप्यो नानासेवां प्रकुर्वते ।
हरेकृष्णमहामन्त्रमतिगुह्यं परात्परम् ।
यो जपेत् श्रद्धया नित्यं राधाकृष्णप्रियो भवेत् ॥
गुरुं प्रणम्य विधिवत्कवचं प्रपठेद्यदि ।
संप्राप्य सहज प्रेम गोलोके वसति ध्रुवम् ॥
इदं रहस्यं परमं मया ते परिकीर्त्तितम् ।
अभक्ताय दाम्भिकाय न प्रकाश्यं कदाचन ॥
शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ।
गोपनीयं प्रयत्नेन कृष्णप्रेम वहिर्म्मुखात् ॥

इति श्रीकृष्णचैतन्यनित्यानन्ददेवसंवादे
श्रीहरेकृष्ण राम महामन्त्रकवचं
समाप्तम्

❀ महामन्त्र विधिः ❀

अथ मन्त्रवरं वक्ष्ये द्वात्रिंशदक्षरान्वितम्।
सर्व्वपापप्रशमनं सर्व्वदुर्व्वासनानलम्॥
चतुर्व्वर्गप्रदं सौम्यं भक्तिदं प्रेमपूर्व्वकम्।
दुर्व्वुद्धिहरणं शुद्धसत्ववुद्धिप्रदायकम्॥
सर्व्वाराध्यं सर्व्वसेव्यं सर्व्वेषां कामपूरकम्।
सर्व्वाधिकारसंयुक्तं सर्व्वलोकैकवान्धवम्।
सर्व्वाकर्षणसंयुक्तं दुष्टव्याधिविनाशनम्।
दीक्षाविधिविहीनञ्च कालाकालविवर्ज्जितम्।
वाङ्मात्रेणार्च्चितं वाह्यपूजाविध्यनपेक्षकम्।
जिह्वास्पर्शनमात्रेण सर्व्वेषां फलदायकम्।
देशकालानियमितं सर्व्ववादिसुसम्मतम्॥ १॥
तस्योद्धारं प्रवक्ष्यामि समाहितमनाः शृणु।
हरेद्वयं तथा कृष्णद्वन्द्वं व्युत्क्रमणात् पुनः।

अब समस्त पाप नाशन, सर्व्व दुर्व्वासना के जलाने में अग्नि स्वरूप, धर्म्म-अर्थ-काम-मोक्ष को देने वाला, अनुग्र स्वरूप, प्रेमलक्षणाभक्ति के दाता, सब की दुर्व्वुद्धि के हरणकारी, शुद्धसत्व रूप भगवद् वृत्तिवाली बुद्धि के प्रकाशक, सब के आराध्य, सर्व्व सेवनीय, सर्वकाम पूरक, सब के समान अधिकार से युक्त, सर्व बान्धव, सब के आकर्षक, दुष्ट व्याधि के नाशकारी, दीक्षादि विधि के अनपेक्षक, काल-अकाल से विवर्ज्जित, अनायास से लभ्य, वाह्य पूजादि विधि की अपेक्षा नहीं करने वाले, जिह्वा स्पर्श मात्र से ही सब का फलदाता, देश-कालादि नियम से स्वतन्त्र, सर्व्ववादि सम्मत, बत्तीस अक्षर से युक्त, मन्त्रश्रेष्ठ महामन्त्र का वर्णन करते हैं॥ १॥

उस महामन्त्र का उद्धार कहते हैं, सावधान मन होकर

हरे रामद्वयं पश्चाद्विलोमेनैव तत्पठेत् ।
सर्व्वाघहरणाद्धेतो र्हरिरित्यभिधीयते ।
भक्तियोगेन सर्व्वेषां जीवाकर्षणकारणात् ।
कृष्ण इत्युच्यते सद्भिः शुद्धसत्वतनुः प्रभुः ।
रामोऽपि लोकरमणात् संसारच्छेदकारकः ।
तस्मान्मोक्षप्रदो रामः सर्व्व-शास्त्रेषु कथ्यते ॥ २ ॥
सम्बोधनप्रियः कृष्णः सम्बोधनपदक्रमात् ।
मन्त्रोऽयं विहितस्तेन तत्र प्रेम्णि नियोजितः ॥
सर्व्वनामस्वरूपोऽयं देहस्वरूप एव च ।
तत्रैकत्र यदि प्रेमा सोभयत्र तदा भवेत् ॥ ३ ॥

श्रवण कीजिये । पहले हरे कृष्ण हरे कृष्ण इस प्रकार दो बार कह कर पश्चात् कृष्ण कृष्ण दो बार कह कर फिर हरे हरे दो बार उच्चारण करें । अनन्तर हरे राम यह पद द्वय दो बार उच्चारण कर पश्चात् राम राम इस प्रकार कहैं । अथ हरे इस पद का दो बार पाठ करे । समस्त पापों का हरण के कारण "हरि" यह शब्द कहा जाता है । भक्तियोग प्रभाव से चराचर समस्त वस्तु के आत्म पर्य्यन्त आकर्षण के कारण शुद्ध सत्वविग्रह श्रीप्रभु साधुजन के द्वारा कृष्ण करके कहे जाते हैं । निखिल जगत् में रमण के कारण संसार बन्धन-उच्छेदकारी श्रीहरि राम करके प्रसिद्ध होते हैं । इसलिये श्रीराम मोक्ष को देने वाले हैं यह समस्त शास्त्र में कहा गया है ॥ २ ॥

श्रीकृष्ण सम्बोधन प्रिय हैं । सम्बोधन का अर्थ अभिमुखी करण है । अतएव सम्बोधन पद क्रम से इस मन्त्र का विधान किया गया है । उक्त मन्त्र में भगवान् निज प्रेमसिद्धि विषय में विनियोजित होंगे । भगवान् समस्त नाम स्वरूप तथा श्रीविग्रहस्वरूप हैं । क्योंकि उन में नाम-नामी भेद किम्वा देह-देही भेद नहीं है । यदि श्रीनाम किम्वा विग्रह दोनों के मध्य में किसी स्वरूप में

चतुर्युगे भवेद्भक्तिर्मुक्तिश्चैव चतुर्युगे ।
तेन नामानि चत्वारि चत्वारि कृष्णरामयोः ॥
भक्तिसाधनतः पापनाशोऽथ मुक्तिसाधनात् ।
तत्रोभयत्र नामानि हरेश्चत्वारि नामतः ॥
सम्बोधनपदं श्रुत्वा प्रभुस्तत्र समागतः ।
किं प्रार्थ्यते भक्तजनैस्तदेव दातुमुद्यतः ॥
एते न प्रार्थ्यते किञ्चिन्नामश्रवणयोगतः ।
वसेत्तेषाञ्च हृदय इत्थम्भूतगुणो हरिः ॥ ४ ॥
मन्त्रे मुक्तिविधानार्थं रामनाम नियोजितम् ।
द्वयोर्विरोधेभक्तानां विधेयं किं तदुच्यताम् ।

प्रेम उत्पन्न होता है तब दोनों वस्तु में वह होता है इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ ३ ॥

सत्यादि चार युग में भक्ति तथा मुक्ति का अनुप्रवृत्ति होती रहती है । इसी अभिप्राय से श्रीकृष्ण नाम तथा श्रीराम नाम का चार बार मन्त्र में निर्देश किया गया है । भक्ति साधन से श्रीकृष्ण नाम तथा मुक्ति साधन से श्रीराम नाम पापों का नाश करता है इसलिये मन्त्र में प्रत्येक का चार बार करके आठ बार प्रयोग किया गया है। चार युग की अपेक्षा से हरे पद का चार चार बार दोनों स्थल में प्रयोग है। सम्बोधनपद का श्रवण कर श्रीमहाप्रभु वहाँ उपस्थित हुए तथा उस मन्त्र के जप के द्वारा भक्तगण क्या प्रार्थना करते हैं—उसे देने के लिये उद्यत रहें । परन्तु भक्तगण परम निष्काम हैं वे भक्तिरूप महाफल के लाभ में परितुष्ट होकर चरणारविन्द की सेवा के बिना अन्य कुछ नहीं चाहते हैं, ऐसा जान कर श्रीप्रभु, नाम श्रवण मात्र करते हुए उनके हृदय में चिरकाल तक निवास करने लगे । भगवान् के इस प्रकार निरपेक्ष गुण होते हैं ॥ ४ ॥

मन्त्र में मुक्तिविधान के लिये राम नाम का नियोग है ।

आदौ भक्त्या भवेन्मुक्तिः संसारच्छेदकारिणी।
तया भागवती भक्तिः प्रेमलक्षणलक्षिता ॥
तथा च ॥
न विना भक्तियोगेन मुक्तिः स्याद्भवसागरात्।
तामृते प्रेमदा भक्ति र्न कदाचित् प्रभोः पदे।
अविद्या-सुख-दुःखानां विनाशाद्विद्यया युतः।
जीवन्मुक्तः स विज्ञेयः प्रेमभक्तिपरायणः।
अमुना मनुना चैतत्साध्यसाधनतत्परः ॥ ५ ॥

श्रीकृष्ण नाम से प्रेमभक्ति प्राप्ति होती है। पद्मपुराणादि ग्रन्थों में श्रीराम नाम की तारक संज्ञा तथा कृष्णनाम की पारक संज्ञा कही गई है। "तारक" से मुक्ति तथा पारक से प्रेमभक्ति होती है इसका भी साथ ही साथ निर्देश किया गया है। भक्ति और मुक्ति दोनों का विरोध स्वभाविक है। भक्ति का अर्थ प्रभु की अनुकूल सेवा मुक्ति का अर्थ प्रभु के साथ स्वरूप में एक भाव है। भेद ज्ञान के बिना सेव्य सेवक भाव ठहरता नहीं है। अतएव दोनों में विरोध अवश्य रहता है। एक ही मन्त्र में दोनों का विरोध परिहार किस प्रकार हो सकता है? ऐसा शिष्य के द्वारा जिज्ञासित होकर गुरुजी सिद्धान्त का उत्तर देते हैं। पहले साधन भक्ति के द्वारा संसारच्छेदकारिणी मुक्ति होती है। उससे प्रेम लक्षणा भागवती भक्ति होती है। ऐसा कहा गया है कि बिना भक्तियोग के भवसागर से मुक्ति नहीं होती है। मुक्ति के बिना कभी भी प्रभुपद में प्रेमदा-भक्ति नहीं है। पराविद्या प्रभाव से मायावृत्ति अविद्या तथा तन्मूलक सुख-दुःखादिमय संसार का विनाश हो जाने पर जीव प्रेम-भक्ति-परायण होता है। तब उस को जीवन्मुक्त कहा जाता है। अतएव उक्त महामन्त्र के अवलम्बन से प्रेमरूप साध्यवस्तु में साधनतत्पर होना सब का अवश्य कर्त्तव्य है ॥ ५ ॥

तत्साधनं प्रवक्ष्यामि यथाविधि क्रमादिह ।
नित्यानन्दो मुनिः प्रोक्तोऽनुष्टुब् छन्द उदाहृतम ।
परमात्मस्वरूपः श्रीचैतन्य एव दैवतम ।
कृष्णनामेति बीजं स्याद्भक्तिः शक्तिरुदाहृता ॥
आद्याशक्तिरधिष्ठात्री देवता प्रेमरूपिणी ।
एतेषां विनियोगः स्यात् प्रेमसिन्धौ प्रभोः पदे ।
अङ्गन्यासं प्रकुर्व्वीत मन्त्रवर्णविभागतः ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण हृदयाय नमस्ततः ।
कृष्ण कृष्णेति शिरसे स्वाहा, चैव हरे हरे ।
शिखायै वौषडित्येव कवचाय हुमित्यतः ।
हरे राम हरे राम, नेत्राभ्यां वौषडित्ययि ।
राम रामेति विज्ञेयमस्त्राय फट् ततः परम् ।
हरे हरे ततः कुर्य्यात् करन्यासमिति क्रमात् ॥ ६ ॥
ततो मन्त्रं लिखेन्मन्त्री पद्मं षोडशपत्रकम् ।
रेखात्रयसमायुक्तं द्वारतोरणसंयुतम् ।
अक्षरद्वयमानेन मन्त्रवर्णांल्लिखेद्दले ।

अब इस महामन्त्र की साधन प्रणाली यथाविधि क्रमानुसार कहते हैं । इस मन्त्र के ऋषि श्रीमन्नित्यानन्दप्रभु, अनुष्टुप्छन्द, परमात्मस्वरूप श्रीचैतन्यदेव एकमात्र देवता, कृष्णनाम बीज, भक्ति शक्ति, प्रेमरूपिणी आद्याशक्ति अधिष्ठात्रीदेवता, इन सब का विनियोग प्रेमसमुद्र श्रीमन्महाप्रभु के चरण-कमल की प्रेमसिद्धि के लिये जानना चाहिये । मन्त्रवर्णों का विभाग करके अंगन्यास करें । "हरे कृष्ण हरे कृष्ण हृदयाय नमः" "कृष्ण कृष्ण शिरसे स्वाहा" "हरे हरे शिखायै वौषट्" "हरे राम हरे राम कवचाय हुम्" "राम राम नेत्राभ्यां वौषट्" "हरे हरे अस्त्राय फट्" ॥ ६ ॥

अनन्तर मन्त्रसाधक षोडश दल कमलाकार एक यन्त्र निर्म्माण कर उस को मण्डलाकार रेखात्रय के द्वारा वेष्टन करें तथा

षट्कोणं विलिखेन्मध्ये कर्णिकायां विधानतः ।
प्रेमाख्यं मध्यदेशे च कामं वीजञ्च कोणतः ।
एतस्मिन्नपि यन्त्रे चाप्याधारादीन् प्रपूज्य च ।
तत्रैव स्थापयेद्धयात्वा यथाविधिक्रमादिति ॥
कनकरुचिरभासः शुद्धसत्त्वैकवेशो
निजसुमधुरनामाख्यानदानैकदक्षः ।
सततमवतु विश्वं श्रीनवद्वीपचन्द्रो
निजपरिजनवीतो दीनबन्धुर्द्विजेन्द्रः ॥
ध्यात्वैवं पूजयेद्भक्त्या परमात्मानमव्ययम् ॥ ७ ॥
कोणाग्रदिक्षु देशे च पूजयेदङ्गदेवताः ।
षट्कोणस्याग्रभागे च सम्पूज्या भक्तिसंयुताः ।

उस में द्वार, तोरण का संयोग करें । पश्चात् प्रत्येक दल में दो दो अक्षर परिमाण से मन्त्रोक्त वर्ण समूह को लिखें । अनन्तर उक्त पद्म के मध्यस्थल की कर्णिका में विधि के अनुसार एक सुन्दर षट्कोण मण्डल का अंकन कर उस षट्कोण मण्डल के मध्यदेश में प्रेमबीज तथा प्रत्येक कोण में कामबीज लिखें । इस यन्त्र में पूर्व्वोक्त पीठन्यास क्रम के अनुसार आधार शक्ति प्रभृति पीठ-शक्ति पर्य्यन्त न्यास कर यथाविधि यथाक्रम से वक्ष्यमाण प्रकार भगवान् का ध्यान कर यन्त्र मध्य में आवाहनादि क्रम के द्वारा उन को स्थापित कर भक्ति के साथ पूजा करें ।

ध्यान इस प्रकार यथा—तपायमान सुवर्ण की तरह अति-मनोहर कान्ति वाले, शुद्ध सत्वात्मक असाधारण विविध परिच्छ-दधारी, निज परम मधुर हरिनाम संकीर्तन के दान करने में परम दक्ष, निज नित्य परिकरों से परिवेष्टित, दीन हीन पतित जनों के एक मात्र बन्धु, द्विजश्रेष्ठ, श्रीनवद्वीपचन्द्र निज प्रेमामृत वर्षण के द्वारा जगत् की रक्षा करें ॥ ७ ॥

पूर्वोक्त पद्माकार यन्त्र के अग्नि-नैऋत-वायु तथा ईशान

नित्यानन्दोऽद्वैतनामा मुरारिः श्रीनिवासकः ।
काशीश्वरो मुकुन्दश्च ततः केशरमध्यतः ।
गदाधरो द्विजवरस्तथा नरहरिः प्रियः ।
दामादरो वासुदेवः शिवानन्दगदाधरौ ।
राघवश्रीरामदासौ सुन्दरानन्दशार्ङ्गिणौ ।
गौरीदासस्ततः पूज्यः परमेश्वर एव च ।
पुरुषोत्तमदासोऽपि तथा वृन्दावनाश्रयः ।
गोविन्दो वासुदेवश्च कमलाकर एव च ।
तद्बहिः पत्रमध्ये च वैष्णवा भक्तितत्पराः ।
गोपीनाथो महेशश्च शुक्लाम्बरसनातनौ ।
जगायिमाधवौ ज्ञेयौ वासुदेवाच्युतावपि ।
दिक्षु पूज्याः प्रयत्नेन प्रेमाश्रुपुलकाचिताः ।
जय गौराङ्ग गौराङ्ग जय विश्वम्भर प्रभो ।
इति वादरता नित्यं प्रेमगद्गदभाषिणः ।
पत्राग्रे तद्बहिः पूज्याः यदुनन्दन एव च ।

कोण में यथा स्थान पर हृदय, शिरः, शिखा तथा कवच इन अंग-देवता चतुष्टय की तथा अग्रदेश में नेत्र और पूर्वादि दिशाओं में अस्त्रदेवता की पूजा करें । अनन्तर षट्कोण मण्डल के अग्रभाग में भगवान् में प्रीतिसम्पन्न श्रीनित्यानन्दप्रभु, श्रीअद्वैतप्रभु,श्रीमुरारि, श्रीनिवास,काशीश्वर,मुकुन्द,इन छै जन की पूजा करें । पश्चात् केशर के मध्यभाग में परमप्रिय, द्विजश्रेष्ठ गदाधरादि षोलह जन भक्त की यथाविधि पूजा करें । फिर उनके बहिर्भाग में पत्र के मध्यस्थल पर दिक् विदिक् क्रम से गोपीनाथ प्रभृति आठ जन परमप्रीतिसम्पन्न वैष्णव की पूजा कर्त्तव्य है । वे सब प्रेममय अश्रुपुलकादि अष्ट-सात्विक भाव से परिव्याप्त, हे गौर अंग वाले गौरांग–हे प्रभो विश्वम्भर ! आप की जय हो ! आप की जय हो !! इस प्रकार जप कीर्त्तन में निरत, प्रेमभर से गद्गद् स्वर में विविध स्तुति करने

गङ्गादासः केशवश्च कृष्णदासस्ततः परम् ।
रघुनाथविश्वनाथौ नीलाम्बरसनातनौ ।
दिव्यमाल्यकराः सौम्याः प्रेमाश्रुपुलकाकुलाः ।
ततोऽन्यावरणान्येव पूर्ववत् परिपूजयेत् ॥ ८ ॥
कोट्येकजपमात्रेण पुरश्चरणमुच्यते ।
दशांशहोमसंख्यानां चतुर्गुणविधानतः ।
जपं कुर्य्यात् प्रयत्नेन वाजसङ्ख्या न विद्यते ।
मालया कररेखाभिर्जपेत् साधकसत्तमः ।
विधिर्मन्त्रजपे प्रोक्तः षष्टिदण्डात्मकं दिनम् ।
स्नानाद्यपेक्षा नास्त्यत्र यथाशक्त्यं करोतु वा ।
इत्येवं साधयेन्मन्त्रं स एव साधकोत्तमः ॥ ९ ॥

❀ इति भक्तिचन्द्रिकायां सप्तमपटलः ❀

वाले हैं। पश्चात् उनके बाहिर पत्र अग्रभाग में श्रीयदुनन्दन आदिक आठ जन वैष्णवों की पूजा करें। वे प्रत्येक करकमल में दिव्यमालाधारी, परम सौम्याकृति हैं तथा अश्रु-पुलकादि भावों से परिवेष्टित हैं। पश्चात् अन्य आवरण अर्थात् इन्द्रादि दिक्पाल-वृन्द तथा वज्रादि अस्त्र समूह की पूर्व्वदर्शित नियम से यथास्थान ध्यान के साथ पूजा करें ॥ ८ ॥

एक कोटि मन्त्र जप से पुरश्चरण सिद्ध होता है। पश्चात् दशांश होम करें। असमर्थ होने पर होमांश दशांश का चतुर्गुण कर यत्न के साथ मन्त्र जाप करें। इस पुरश्चरण में कोई काल संख्या निर्दिष्ट नहीं है। साधक जपमाला किम्वा कररेखा के द्वारा जप का साधन करें। इसकी विधि तन्त्रशास्त्रोक्त विधि के अनुसार जानना चाहिये। साठ दण्ड दिनमान का विभक्त कर इस मन्त्र का जप करें। इसमें स्नानादि क्रिया की अपेक्षा नहीं है। साधक निज शक्ति के अनुसार इसका अनुष्ठान करें ॥ ९ ॥

गौड़ीयग्रन्थगौरवः-

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें-

१—गदाधरभट्टजी की वाणी ॥)

२—सूरदासमदनमोहनजी की वाणी ॥)

३—माधुरीवाणी (माधुरीजी कृता) ॥=)

४—वल्लभरसिकजी की वाणी ।=)

५—गीतगोविन्दपद (श्रीरामरायजी कृत) ।)

६—गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजीकृत) ।)

७—हरिलीला (ब्रह्मगोपालजीकृता) =)

८—श्रीचैतन्यचरितामृत (श्रीसुबलश्यामजीकृत) ५॥)

९—वैष्णववन्दना [भक्तनामावली] (वृन्दावनदासजीकृता) =)

१०—विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दावनदासजीकृता) ।)

११—प्रेमभक्तिचन्द्रिका (वृन्दावनदासजीकृता) ।)

१२—प्रियदासजी की ग्रन्थावली ।=)

१३—गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदासजीकृता) ।)

१४—राधारमणरससागर (मनोहरजीकृत) ।)

१५—श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजीकृता) ।-)

१६—भाषाभागवत [दशम,एकादश,द्वादश] (श्रीरसजानि-
वैष्णवदासजीकृत) प्रेम से पाठ

सानुवाद संस्कृतभाषा में—

१—अर्च्चाविधिः (संगृहीत) ।)
२—प्रेमसम्पुटः (श्रीविश्वनाथचक्रवर्तीजीकृत) ।)
३—भक्तिरसतरङ्गिणी (श्रीनारायणभट्टजीकृता) १)
४—गोवर्द्धनशतक (श्रीविष्णुस्वामी संप्रदायाचार्य्य श्रीकेशवाचार्य्यकृत) ।)
५—चैतन्यचन्द्रामृत और सङ्गीतमाधव (श्रीप्रबोधानन्द-सरस्वतीजीकृत) १।)
६—नित्यक्रियापद्धति (संगृहीत) ॥=)
७—व्रजभक्तिविलास (श्रीनारायणभट्टजीकृत) २॥)
८—निकुञ्जरहस्यस्तव (श्रीमद्रूपगोस्वामिकृत) विना मूल्य
९—महाप्रभुग्रन्थावली (श्रीमन्महाप्रभुमुखपद्मविर्गता) ।-)
१०—स्मरणमङ्गलस्तोत्र (श्रीमद्रूपगोस्वामिजीकृत) ॥=)
११—नवरत्नं (श्रीहरिरामव्यासजीकृत) ।=)
१२—श्रीगोविन्दभाष्यं (श्रीपादबलदेवजीकृत) ४॥)
१३—ग्रन्थरत्नपञ्चकम् १॥)
श्रीराधाकृष्णगणोद्देशदीपिका (श्रीश्रीरूपगोस्वामिजीकृता)
श्रीश्रीलीलास्तवः (श्रीश्रीसतातनगोस्वामिजीकृत)
श्रीगौरगणोद्देशदीपिका (श्रीकविकर्णपूरजीकृता)
श्रीव्रजविलासस्तवः (श्रीश्रीरघुनाथदासगोस्वामिजीकृत)
श्रीसंकल्पकल्पद्रुमः (श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्तीजीकृत)
१४—श्रीमहामन्त्रव्याख्याष्टकम् (सञ्चित)